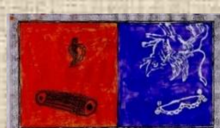
ISBN Number: 978-93-342-1286-0 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४११ म अकं ०१ फरबरी २०२५ (वर्ष १८ मास २०६ अकं ४११)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मथिली साहित्य आन्दोलन: मानषुीमिह सस्ंकृताम ्



विदेह- प्रथम मथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 411 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनक्रुम

ऐ अंकमे अछि:-

पद्य



१.अकं ४१० पर टिप्पणी

प्रणव कुमार झा

वैज्ञानिक वा वास्तविकताक दृष्टिकोण सं देखल जाय त अनंत ब्रह्मांड वा आकास मे विचरित तारा सभक सापेक्ष चंद्रमाक की बिसात ! मुदा मनुषक सापेक्ष नील गगन मे अनगिनत तारा के बीच चमकैत पूर्णिमाक चाँद आदि काल सं लोक के चकित, चमत्कृत आ आकर्षित करईत रहल अछि। दुनियाँक सभटा भाषा मे चंद्रमा पर नै जानि कतेक कविता लिखल गेल होयत, तथापि प्रकृति के ई सुंदरताक प्रति मनुषक आकर्षण मे कोनो कमी नहि भेल आ नित नव नव रचना होइते रहय अछि।

विदेह ४१० म अंक मे राज किशोर मिश्रक कविता ’पुर्णिमा’ के एहि क्रम मे देखल जा सकय अछि। कवितक माध्यम से पूर्णिमा के सुंदरता संग अमावस से पूनम आ पूनम से अमावस तक के यात्रा के वर्णन आ ओकरा मनुष्य जीवन से जोड़बाक प्रयास कयल गेल अछि।

प्रमोद झा 'गोकुल' के खिस्सा ’जय गोड़ैया बाबा !’ सुदूर गामक सीमांत किसान सबहक मन-मस्तिष्क के मध्य व्याप्त ग्राम देवता सभक आस्था आ पैसाक भेलू के इंगित करय अछि।

कल्पना झाक ’उपेंद्र नाथ झा व्यास’ सीरीज सही जा रहल अछि।

कुमार मनोज कश्यप के लघुकथा ’यथावत’ अति गरीब कूड़ा बिननिहार समाज के यथावत स्थिति पर प्रकाश दैत अछि, मुदा पढ़लाक बाद हमर दृष्टि

ओहि से आर आगा जा क देखय अछि जे ई समाज के बच्चा सभ नशाखोरी आ अपराध के दलदल मे सेहो बहुत गहिर तक धंसल रहय अछि। अपन राजनीति आ सरकार के ई सब पर ध्यान देबाक फुर्सत बहुत कम रहय अछि !

-अनभुाग अधिकारी राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-३

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-मोहभंग

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य

२.४.लाल देव कामत-कोय बोलतै रे !

२.५.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- पारस

२.६.आचार्य रामानंद मंडल-मैथिली मानकीकरण/ महाकुंभ

२.७.प्रणव कुमार झा- टी.यू. 142 विमान आ आईएनएस कुरसुरा पनडुब्बी के झलक (यात्रा संस्मरण)

२.१.कल्पना झा-मथिली साहित्यम ेउपन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव ंहुनक परिवारक योगदान-३



कल्पना झा

मथिली साहित्यम ेउपन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव ंहुनक परिवारक योगदान-३

मथिली साहित्य म ेव्यास जीक पदार्पणक बाट खोलतै 'ओ' विदाइ गीत

राजमाता साहिबा सँ नियमित प्रतिमास पाँच रु.क छात्रवृत्ति प्राप्त होमए लगलनि आ आगाँक शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करबा दिशि अग्रसर होइत रहलाह उपेन्द्र नाथ। अपन गाम सँ राजनगर अएलाह। मिडिल सँ आगाँ राजनगर आबि ओत्तहि केर हाइस्कूलक होस्टल मे रहि पढ़लनि उपेन्द्र नाथ जी। स्कूलक संस्थापक धीरेन्द्रनाथ लाहा आ स्कूलक अन्य शिक्षकक सहयोग

एवं आशीर्वाद सदति भेटैत रहलनि।

मुदा अपन विपन्नता ... आर्थिक अभाव ... कखनो काल कऽ व्यग्र कऽ दैत छलनि बालक उपेन्द्र कैँ, जे 'आब आगाँ हम कोना पढ़ब ? हमर संस्कृतक किताब, हमर भूगोलक नक्शा, हमर गणितक पोथी-हमर नैया पार कोना लागत ? आब की हेतैक ?' धीरेन्द्रनाथ लाहा पीठ ठोकथिन - और पढ़ो ! और पढ़ो !! मुदा आगाँ पढ़ब कोना से चिन्ता रहि-रहि कऽ परेशान करनि।

जखन चारू दिस अन्हारे अन्हार पसरल नजरि आबए लागैत छैक, तखन जँ केओ भगवानक पठाओल दूत जकाँ आबि जाइत छैक आ आगाँक बाट प्रशस्त होइत जाइत छैक, एहन मे मनुक्खक भीतर कोनो अदृश्य शक्ति, माने देवता-पितर पर अपार श्रद्धाक भाव उमड़ब स्वाभाविक। आ जैँ कि 'व्यास'जी कैँ एक बेर नहि, अनेक बेर साक्षात् दैवी कृपाक अनुभव भेल छलनि, तैँ देवता-पितर पर अविचल-अडिग आस्था रहलनि जीवनक अन्तिम साँस धरि। पूजा-पाठ करब, सन्ध्यावन्दन आ प्रातः गंगा-स्नान आदि ओ कहियो नहि छोड़लनि। एक बिचे जखन 'व्यास'जी पटना मे पढ़ैत छलाह तँ कतेको हुनकर आत्मीय मैथिलबन्धु जनउ जरा कऽ चाटि गेल रहथि। हिनका सेहो कहल गेलनि, मुदा 'व्यास'जी टस-सँ-मस नहि भेलाह। कारण हुनकर इंजीनियरिंग कॉलेज धरि पहुँचब, इंजीनियर बनब, सामान्य बात नहि छलए। बड्ड बेसी संघर्षपूर्ण रहलनि 'व्यास' जीक इंजीनियर बनबा धरिक समय। बिनु दैवी कृपाक संभव नहि छलनि ओतए धरि पहुँचब। जतए धरि पहुँचबाक ओ स्वयं सोचियो नहि सकैत छलाह, ततए धरि पहुँचब वास्तव मे दैवीए कृपा भेल ने !

खर्रख जाएब-आएब रहैत छलनि। खर्रख सँ 'व्यास' जीक परिवारक बड्ड दूरस्थ सम्बन्ध रहनि। मुदा खर्रख मे स्व. बलभद्र बाबू आ दयाबाबू सँ हिनका

अतिशय स्नेह, सहयोग, सम्बल आ आत्मीयता भेटलनि। ओहि स्नेह, सहयोग, सम्बल, आत्मीयता केँ ओ आजीवन नहि बिसरलाह। हिनका लोकनिक चर्चा कहियोकाल धिया-पूताक सोझाँ करैत रहैत छलाह।

मैट्रिक मे फर्स्ट डिवीजन भेला उत्तर स्वयं बलभद्र बाबू 'व्यास' जीक गार्जियन भऽ गेल रहथिन। मैट्रिकक रिजल्ट होइतहि बलभद्र बाबू घोषणा कएलनि - 'आब एहि बच्चाक देख-रेख हम स्वयं करब !' हुनकहि आदेश सँ 'व्यास' जी इंजीनियरिंग कालेज मे एडमिशन लेलनि। हुनकहि निर्णय छलनि ई। आ बहुत नीक, शत् प्रतिशत उचित निर्णय छलनि, से 'व्यास' जी स्वयं स्वीकार करैत छलाह।

बलभद्र बाबूएक युक्ति सँ 'व्यास' जी केँ आइ.एस-सी. मे पढ़बा काल राजमाता सँ प्रतिमास १५/- छात्रवृत्ति भेटए लगलनि। एहि मे ९ रु. मेसचार्ज, सीटरेन्ट ३ रु. आ पुस्तकादि अन्य खर्च ३ रु. रहैत छलनि। आइ. एस-सी. मे कालेजक फीस माफ छलनि 'व्यास' जीक। पुनः जखन इंजीनियरिंग कालेज मे एडमिशन भेलनि तँ बलभद्र बाबूक असीम कृपा सँ 'व्यास' जी केँ राजमाता सँ २५/- रु. प्रतिमास छात्रवृत्ति भेटए लगलनि। एहि मे कालेजक फीस ८ रु., सीटरेन्ट ४ रु., मेसचार्ज ९ रु., पुस्तकादि अन्य खर्च ४ रु. भेटैत छलनि। एहि तरहेँ इंजीनियरिंग केर पढ़ाइ कएलनि 'व्यास' जी।

आब गप्प करब 'व्यास' जीक साहित्यिक यात्राक। एक तरहेँ ओ जन्मजात कवि छलाह; रस-छन्द अलंकार मे डूबल आत्मा; तेहन सन। जे देखार भेलनि किशोर वय मे आबि। माने किछु-किछु लिखब शुरु कएलनि किशोरावस्था सँ।

पहिले पहिल जे लिखलनि, से छलनि एकटा विदाइ-गीत। जे भरि राति जागि कऽ लिखने छलाह 'व्यास' जी। पंक्ति-पंक्ति अश्रु मे डूबल। एकर पाछाँ प्रसंग ई अछि, जे राजनगर हाइस्कूलक संस्थापक धीरेन्द्रनाथ लाहाक बदली भऽ गेल रहनि। समस्त राजनगर जनपद एहि समाचार सँ मर्माहत भऽ उठल छलए। परिसरक समस्त लोक, सभ शिक्षक-कर्मचारी-विद्यार्थी भावविह्वल भऽ उठल छलाह। हुनक विदाइ-समारोहक भव्य आयोजन भेल रहैक। ओहि समयक एकटा प्रसिद्ध तर्ज रहैक --

"मसीहा बनके बीमारों को किस पर छोड़ जाते हो...."

एहि तर्ज पर पं. श्री शुकदेव झा विदाइ गान लिखने रहथि, आ तकरा हुनक प्रिय शिष्य कोइलखक भवनाथ (पछाति डाक्टर) गाबि-गाबि रियाज करैत रहथि।

'व्यास' जी स्वयं धीरेन्द्र बाबूक वैदुष्य आ विशाल हृदय सँ बेस प्रभावित छलाह। हिनका मोन मे सेहो इच्छा जगलनि जे हमहूँ एकटा विदाइ-गान प्रस्तुत करी। भिड़ि गेलाह लिखबा मे। भरि रातिक अथक प्रयासक बाद एकटा मार्मिक विदाइ-गान तैयार भेलनि। जकर किछु पंक्ति एहि तरहेँ अछि --

"वीर वीर इन्द्रक करुणासँ
सुख समीर संचार जतए
नन्दन वन सन पुष्पावलिमे
अछि क्रन्दन जंजाल कतए ?"

अस्तु; उक्त विदाइ-गान लिखैत 'व्यास' जीक पदार्पण भेलनि मैथिली

साहित्य मे। आ से हुनकर लेखनी निर्बाध चलैत रहलनि...अनवरत..जीवनक अन्तिम साँस धरि...। लेखनीक स्तर ततेक प्रभावशाली रहलनि, जे दु -दू बेर साहित्य अकादमी पुरस्कार दिऔलकनि। पुरस्कारक संग अमरत्व सेहो दिऔलकनि। मैथिली साहित्य मे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' सूर्य सन दैदिप्यमान छथि आ रहताह सभदिन, ई कहबाक बेगरता नहि।

उपरोक्त विदाइ-गान भले ही 'व्यास' जीक लिखल पहिल पद्य रचना छलनि, मुदा कविता हुनकर नस-नस मे छलनि जन्महि सँ। बस ओहि गुण कैँ बहरएबाक अवसर भेटबाक देरी छलनि। से पहिल अवसर भेटलनि राजनगर हाइस्कूलक संस्थापक धीरेन्द्रनाथ लाहाक विदाइ-समारोहक आयोजनक लाथैँ।

'व्यास' जीक भीतरक एहि जन्मजात कवि कैँ बहरएबा मे हुनकर इतिहास विषय मे कम रुचि, सेहो सहायक रहलनि। इएह दोसर कारण, मूल रूप सँ माध्यम बनलनि एकटा कविक रूप मे उपेन्द्र नाथ कैँ ख्याति दिअएबाक। सेहो स्कूलिए जीवन मे। असल मे 'व्यास' जी कैँ गणित, हिन्दी, संस्कृत आ भूगोल पर अधिकार जकाँ रहनि। मुदा इतिहास मे बड्ड रुचि नहि लेथि। इतिहास बिसरि जाइथ। बाप के ? बेटा के ? इस्वी कोन ? क्षेत्र कतय ? नीति की ? कूटनीति की ? इतिहासक पोथी देखि क' हुनका आतंक पैसि जाइन। तखन ओ एकटा उपाय कएलनि। इतिहासक घटना सभ कैँ छन्दोबद्ध रुप मे लिखब आरम्भ कएलनि।

माने कहल जा सकैत अछि जे इतिहासक कोखिसँ 'व्यास' जीक कविताक जन्म भेल !

एहि तरहेँ धुरझार कविता लिखब शुरु छलनि स्कूलिए जीवन मे 'व्यास' जीक। मूल कविताक संग किछु अंग्रेजी कविताक अनुवाद सेहो स्कूलिए जीवन मे करए लागल छलाह। आ से कोनो एहन - ओहन कविक नहि, Keats आ Shelley सन उच्च कोटिक लिखनाहरक कविता सभक अनुवाद। जनिकर लिखल कविता बुझनाइ सेहो कठिन रहैत छैक बहुत लोक लेल। आश्चर्यजक गप्प जे, जेना कि ताहि दिन प्राइमरी स्कूल मे (पाँचवीं कक्षा धरि) अंग्रेजी नहि पढ़ाएल जाइत छलैक, तहिना 'व्यास' जी जखन छठमा क्लास मे गेलाह; तखन अंग्रेजी पढ़ब शुरु कएलनि। माने A B C D सिखलनि छठमा मे आबि कऽ। आ कोना एक्कहि-दू बरखक बाद अंग्रेजी कविताक मैथिली अनुवाद करब सेहो शुरु कऽ देने छलाह, से अजगुत बात ! किछु दैवी शक्ति छलनि जेना !

कोर्स के पढ़ाइक संग अन्यान्य गतिविधि सँ सेहो सभदिन, सभठाम, माने स्कूल-कॉलेज सभतरि अपन प्रतिभाक विशेष छाप छोड़लनि। इएह कारण छलए, जे 'व्यास' जीक कुशाग्र बुद्धि सँ हुनकर शिक्षक सभ बेस प्रभावित रहैत छलाह।

व्यासजीक साहित्यिक यात्रा पर नजरि खिराएब, तँ ई स्वतः स्पष्ट भऽ जाएत, जे हुनक रचनात्मक जीवन मे निरन्तरता रहलनि। भले ही दू टा कथा-संग्रहक (विडम्बना १९५२ आ भजना-भजले १९८९ मे) प्रकाशन वर्ष मे गैप ३७ वर्षक छनि, मुदा साहित्य-सेवा मे अनवरत लागल रहलाह। कथाक अतिरिक्त उपन्यास, कविता, खण्ड-काव्य, यात्रा-साहित्य, संगहि अनुवाद-साहित्य कैँ सेहो पुष्ट करैत रहलाह।

जखन कि व्यासजीक रचनात्मक परिवेशमे कतेको उठा-पटक होइत

रहलनि। बहुत तरहक परिवर्तन आएल, समाज मे, देश मे, दुनियाँ मे। सभ सँ पैघ परिवर्तन राजनीतिक क्षेत्र मे आएल, राजनीतिक दासत्व सँ मुक्ति भेल। संविधान सँ लोक कैँ मौलिक अधिकार भेटलैक। शिक्षाक प्रचार-प्रसार भेल।

सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र मे परिवर्तन आएल। युग-युग सँ गामक निर्मल आ स्वच्छ वातावरण मे पोषित मानसिकता बला लोक सभ शहर दिस पड़ाएल। गामक गाम उजड़ैत गेल, शहर पसरैत गेल। मिथिला मे कारखानाक स्थापना भेल। कारखानाक धुआँ सँ, निर्मल वायु-आच्छादित आकाश धूम्रमय होमए लागल। लोकक जीवन-यापन, रहन-सहन मे परिवर्तन आएल। विकृति, छल-प्रपंच आ दाव-पेंच बढ़ल। परन्तु 'व्यास'जीक रचनात्मक दृष्टि, अपन परिवेशक भौतिक-अभौतिक परिवर्तनक प्रति असम्बद्ध रहल, अप्रभावित रहल। स्थान, काल आ पात्र मे यत्किंचित परिवर्तनक अछैतो, 'व्यास' जीक रचनात्मक मूल्य स्थापना आ तकर पल्लवन मे परिवर्तन नहि आएल।

उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' जी जे-जतबा साहित्य-सृजन कएलनि, से आदर्शोन्मुख परिलक्षित होएत। मतलब समाज मे एकटा आदर्श स्थापित करबाक प्रयास रहलनि, से स्पष्ट देखा पड़त।
'व्यास' जीक कथाक पात्र, मातृभाषा मैथिलीक प्रति अटूट आस्था राखएबला भेटत, पिआजु-लहसुन नहि खाए, भारतीय संस्कृति का आचार-व्यवहार मे आस्था राखएबला भेटत, पांजिबला लोक सँ बेसी शुद्ध आचरण करैत देखा पड़त। संगहि जाति, धर्म, वर्ण, क्षेत्र आदिक आधार पर मनुष्य-मनुष्यक बीचक विभेद कैँ मेटाए, मानवीय गुण कैँ प्रतिस्थापित करैत पात्र सभ देखा पड़त। करुणा आ प्रेम, मानवीय गुण छैक, जाति आ धर्मक बान्ह मे नहि बान्हल रहैत छैक, तकरा स्थापित करैत देखा पड़त। तहिना ममता,

सद्भावना-धर्म, जातिगत गुण नहि मनुष्यजनित गुण अछि, ई सभ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि 'व्यास' जी रचित कृति सभ मे।

स्कूलिए जीवन मे, जखन 'व्यास' जी शुरुआत कएलनि कविता लिखब, तखनुक एकटा कविता अवलोकनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी, जे आदरणीय हितनाथ झा जीक सौजन्य सँ प्राप्त भेल अछि --

जहिया उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' राजनगर हाइ स्कूल मे पढ़ैत रहथि, ओही समयक लिखल ई कविता अछि।

मिथिला

◆●■■●◆

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास"

हिमिगिरि उत्तर दिशि मे राजित जनिक उच्चतम श्रृंगे ।

जगदम्बा पति ,पितु सिर बहयित दक्षिण दिशि छथि गङ्गे।।

पूर्व दिशा अतितीव्र गामिनी नदी कौशिकी प्रवहित ।

गंडक पुनि पर्वत सँ निकसित पश्चिम बहयित जनहित ।।1।।

मिथिल नाम महाराज नाम पर अछि तुअ नाम प्रसिद्धे।

जनक आदि अमरोपन मुनिगण बहुत भेला अरु सिद्धे ।।

जनक तनूजा लक्ष्मी आदिक छली देवि अवतारे।

नाम जनिक स्मरण होइत मनु जाइत अछि भवपारे।।2।।

किन्तु पूर्व शुभ युग सब बीतल आब न छथि ओ मिथिला।

कर्म्म- धर्म्म - वंचित निज जनसँ भय गेली अछि शिथिला।।

जतय मदन अरु कालिदास छल शंकर झा सन वीरे ।

ओतय मूर्ख महिषी चरवाही मे अछि पड़ल अधीरे ।।3।।

मैथिल ! आबहुँ उठु एहि जगमे सब क्यो काज करै अछि।

पूर्वोपार्जित यशक ध्यान कयला सँ लाज अबै अछि ।।

दुर्दिन अपन देखि कय , आबहु पढ़ु निज वेद विचारू ।

देशक उन्नति करू सुचित भय , भाषा अपन प्रचारू ।।4।।

एच. ई.स्कूल , राजनगर ।

"ओहि कालक मैथिली कविताक विषय-वस्तु मात्र देश-दशा आ मातृभाषा

रहैत छलए। 'व्यास' जी ओहू आयु मे, माने छात्रावस्थो मे, मैथिली काव्यक केन्द्रीय धाराक संग छलाह। उक्त कविताक प्रतिपाद्य विषय यैह थिक। एतावता प्रमाणित होइत अछि जे 'व्यास' जी ओहू आयु मे , छात्रावस्थो मे, मैथिली काव्यक केन्द्रीय धाराक संग छलाह। दोसर बात, 'व्यास' जी अपन जाहि मानसिकताक लेल आइ जानल-मानल जाइत छथि ताहि सँ भिन्न हुनक ओहू दिनक विचार नहि छलनि। तात्पर्य ई जे 'व्यास' जी स्कूलिए जीवन मे 'व्यास' बनि गेल छलाह; आ से केवल उपनामे मे नहि, वैचारिकता मे सेहो।" 'व्यास' जीक लेल मोहन भारद्वाज जीक वक्तव्य !

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-मोहभगं



प्रमोद झा 'गोकुल'

मोहभगं

-मम्मी !!

-हँ कह ने !

-कने हम जाइ छियौ !

-कत्त ?

-निच्चाँ !

-से किए ?

-एकरा ऐ बुकक काज छै ! किताब देखबैत बाजल ।

-त' द' दही,फेर ल' अनिहें !

-नै गै ! ई एकर फोटो कराके लेतै !

-बेस ते जो । मुदा जल्दिये चल अबिहें,राति त' अधिक भ' गेलैये रौ !

-बस ,आधा घंटा मे आबि रहल छियौ !

-झपसिन जो आ आ !!बापो ऐबते हेथुन !

तखने घरक घंटी घनघना उठलै.अबाम बाली धरफराके दरबज्जा खोललैन ते देखत छथि सौरभक पप्पाके एकटा भैरगर झोड़ा नेने ठाढ़।.सकपकैत बजलीह ओ -मर कखैन एलियै ?

-पंद्रह मिनट सँ माइ-पूतक स्नेहिल वार्तालाप सुनि बेसुध भै गेल छलहुँ ,तेँ घंटी दबबै मे विलम्ब भेल.

-ओ...आब बुझलियै .अहूँ के कनसोह लै के आदैत कहियो नै जायत ।हद्द छी अहूँ !चलू घर आउ !!! कड़ैक के बजलीह अबाम बाली

-ऐ मे बिगरैक कोन बात भेलै ?जे अहाँ एना इनहोर भै रहल छी !दिनो मे त' ई काज भैसकैत छलै !

-किताबक फोटो लेतै एकर दोस...ओ एलैये लै ले एखन आ ई जैतै दिन मे !हुँह...

ओ...ठीक !एक कप चाह आ पानि भेटत ?

-हँ दै छी !

एही अंतराल मे सौरभ अपन दोसक संग बाहर होमय लागल कि पिता गम्भीर स्वर मे टोकलखिन -कतेक बजै छै ?

-साढ़े आठ !

-नौ बजे तक आबि जैहेँ !

-ठीक छै !

तखने अबामबाली चाह आ पानि टेबुल पर रखैत बजलीह -

-लिय पीबू आ मोन शान्त करू !

चुप्पे मूहेँ मोहनजी पानि पीबि चाहक चुस्की लेमय लगलाह परंतु धेयान धैर टिक टिक करैत घड़ीक सुइये पर छलैन्ह .जखन घड़ीक सुइ दस पर चल गेलै तखन पत्निक दिस प्रश्न सूचक दृष्टियें तकैत बजलाह -दस बाजि गेलै आ अहाँक दुलड़ुवाक कतौ पता नञि !

-हे हमर खून बेसी नै चूसू...जे घड़ी ने एलैये !

-फेर वैह बात !वच्चा अहाँक कत' जाइये आ की करैये से पता अछि?

-हँ कोनो अपकर्म नै करैये !चुप रहू नै ते...

-बेस ते अहूँ कान खोइल के सूनि लिय !

- की ?

- यैह जे बेटा के जँ पुलिश थाना पर पकैर के ल' जैत त' हम छोड़बैले नै जेबै !

-हँ हमर बेटा चोरी आ डकैती करैये ने !जे पुलिश पकैर के ल' जेतै !

-टोला मुहल्ला मे चारिटा एहन छौंड़ा छै जे छौंड़ी सब के सीटी मारैत आँखि मुनि का बाइक चलवै छै,तै मे अहूँक बेटा अछि !

-अहाँ पागल ते नै भ' गेलौंएँ जे एहन भाखा भखै छी !

-एखन तक ते नै भेलौंएँ मुदा अहाँ सब क' देब !

-के अहाँक संग माथ भुकाबे ? एतवा कहि अबामबाली टीभी ऑन कय कोनो सिरियल देखय लगली.थोड़बे कालक बाद कॉल बेल बाजि उठलै क्रीं क्रीं क्रीं...दरबज्जा खोललैन ते देखै छथि झूमैत ठाढ़ बेटा के .अकबका गेली दृश्य देखि.अजीब तरहक गंध नाक में लगलैन ते अपरतीब होइत बजलीह - एहन दुर्गंध कत से अबै छै रौ ! आर कने सटिके गेली त' जी ओकवैत जोर सँ बाजय लगलीह-शराव पी के एलैंहँ रौ !! सिगरेटोक गंध सेहो लगैये ...ठीके कहै छलौं अहाँ यौ...पतिक दिस कातर दृष्टियें कनैत बजलीह

-शान्त होउ! बूइझ गेलियै ने वास्तविक बात ! आब सुधैर जायत !जो भीतर कल बल सूत गे ! काल्हि तोहर खबैर लै छी .

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.परमानन्द लाल कण-तीथर्क्षत्रेक माहात्म्य

परमानन्द लाल कण

तीथर्क्षत्रेक माहात्म्य



তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ সৃষ্টি খণ্ড)

যুধিষ্ঠির কহলনি - নারদ জী ! মহর্ষি বসিষ্ঠ কের বতাওল গেল তীর্থ, জেকরা স্মরণ সঁ সব পাপ নষ্ট ভঽ জাযত অছি , সে বতাউ ।

নারদ জী কহলনি - ধর্মরাজ যুধিষ্ঠির ! হিমালযক পুত্র অর্বুদ পর্বতক যাত্রা কর'ক চাহী , জাহি ঠাম মহর্ষি বসিষ্ঠক আশ্রম অছি আ তীনু লোক মে বিখ্যাত অছি । ওহি ঠাম এক রাতি রুকনা পর সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । ব্রহ্মচর্য ব্রতক পালন করৈত পিঙ্গীতীর্থ মে আচমন করনা সঁ সএ গাযক দানক ফল মিলৈত অছি । ও বিশ্ববিখ্যাত তীর্থ অছি । ওহি ঠাম সাক্ষাত অগ্নিদের নিরাস করৈত ছথিন । এহি তীর্থ মে নহেলা সঁ অগ্নিষ্টোম আ অতিরাত্র যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তকর বাঁদ সরস্বতী আ সাগরক সঁগম মে স্নান করনা সঁ সহস্র গোদানক ফল পাবি লোকনি স্বর্গলোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত অছি । জে কেও রুণ দেরতাক এহি তীর্থ মে স্নান কঽ একাগ্রচিত্ত ভঽ তীন রাতি রুকি দেরতা আ পিতরক তর্পণ করৈত অছি , ও চান সন কান্তিমান ভর জাযত ছথি আ হুনকা অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মেলৈত ছৈন ।

ভরতশ্রেষ্ঠ ! ওহি ঠাম সঁ রবদান নাম সঁ তীর্থক যাত্রা কর'ক চাহী । রবদান মে স্নান করনা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । তকর বাঁদ নেম নিষ্ঠা সঁ বহি নিযমিত আহারক সেরন করৈত দ্বারিকাপুরী দিস গমন কর'ক চাহী । জাহি ঠাম কমলক ছাপসঁ চিহ্নিত মুদ্রা দৃষ্টিগোচর হোযত অছি । ওহি ঠামক কমল দল মে ত্রিশূলক চিন্হ দৃষ্টিগোচর হোযত অছি । ওহি ঠাম মহাদের জীক নিরাস স্থল অছি । জে কেও সাগর আ সিন্ধু নদিক সঁগম পর রুণ তীর্থ মে স্নান কঽ একাগ্রচিত্ত সঁ দেরতা,ঋষি আ পিতরক তর্পণ করৈত ছথি , ও অপন তেজ সঁ দেদিপ্যমান ভঽ রুণলোক জাযত ছথি । যুধিষ্ঠির ! মনিষী লোকনিকক কথন অচি জে ভগরান শঙ্কুকর্ণেশ্বরক পূজা করনা সঁ দশ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত

ঋছি। শঙ্কুকর্ণেশ্বৃব তীর্থক প্রদিক্ষিণা কহ তীন্ব নোক মে রিখ্যাত তিমি নামসঁ তীর্থ স্থন পব গমন কব'ক চাহী। ও সর পাপ নাশক তীর্থস্থন ঋছি। ওহি ঠাম স্নান কহ দেরতা সহিত রুদ্রক পূজা কবনা সঁ জন্ম ভবিক পাপ নষ্ঠ ভহ জাযত ঋছি। তদন্তব , সরহক প্রশংসিত রস্বধাবা তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী। জাহি ঠাম গেনা সঁ ঋশ্বৃমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত ঋছি। জে কেও ওহি ঠাম স্নান কহ একাগ্রচিত্ত ভহ পিতবক তর্পণ কবৈত ঋছি ,ও রিষ্ণু নোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি। ওহি ঠাম রস্ব নোকনিকক দোসব তীর্থ স্থন সেহো ঋছি , জাহি ঠাম স্নান র জনপান কবনা সঁ মান্বষ রস্বনোকনি মে পিযবগব ভহ জাযত ছথি। ব্রঁবহ্মতঙ্গী নাম সঁ তীর্থ মে পরিত্র ,শ্বৃদ্ধ চিত্ত,প্বণ্যাম্মা ঋা বজোগ্বণ বহিত নোকনি ব্রঁবহ্মনোক চনি জাযত ছথি। ওহি ঠাম বেণ্বকাক তীর্থ স্থন সেহো ঋছি ,জেকবা দেরতা সেহো সেরন কবৈত ছথিন। ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ ব্রঁবাহ্মণ চান সন নির্মন ভহ জাযত ঋছি।

তদন্তব , পঁচনদ -তীর্থ মে জা কেঁ নিযমিত খাওত-পিরৈত নেম নিষ্ঠা সঁ রুকক চাহী। এহি সঁ পঁচ যজ্ঞক ঋন্বষ্ঠানক ফন মিনৈত ঋছি। তকব ব্রাঁদ ভীমা নদিক নীক স্থান পব জাযরাক চাহী ,জাহি ঠাম স্নান কবনা সঁ কখনহুঁ ও গর্ভ মে নহি ঋারৈত ছথি ঋা এক নাখ গোদানক ফন মিনৈত ঋছি। গিবিকুঁজ নাম সঁ একঠা তীর্থ স্থন ঋছি জে তীন্ব নোক মে প্রসিদ্ধ ঋছি ,তাহি ঠাম গেনা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত ঋছি। তকব ব্রাঁদ রিমন তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহি। এহি ঠাম স্নান কবনা সঁ রাজপেয যজ্ঞক ফন মিনৈত ঋছি ঋা নোকনি সর পাপ সঁ ম্বওক ভহ পবম গতি পারৈত ছথি।

কাশ্মীব মে রিতস্তা নাম সঁ তীর্থ স্থন ঋছি , জে নাগবাজ তক্ষকক নিরাস স্থন ঋছি। ঞা তীর্থ স্থন সর পাপ কেঁ দূব কব' রানা ঋছি। জে কেও এহি তীর্থ স্থন মে স্নান কহ দেরতা ঋা পিতবক তর্পণ কবৈত ঋছি , হ্মনকা রাজপেয যজ্ঞক ফন মেনৈত ঋছি। হ্মনকব হৃদয সর পাপ সঁ শ্বৃদ্ধ ভহ জাযত ছৈন ঋা ও পবম গতি পারৈত ছথি। তকব ব্রাঁদ মনদ নাম সঁ তীর্থ ক্ষেত্রক যাত্রা কব'ক চাহী। রিদ্বদজনক কথন ঋছি জে কেও এহি ঠাম সাঁঝ মে রিধি রিধান সঁ ঋগ্নিদের কেঁ যথাশক্তি পূজন র পিতবক নিমিত্ত দান দৈত ছথিন , ও দান ঋক্ষয ভহ জাযত ঋছি। একব রাদ দীর্ঘসত্র নাম সঁ তীর্থ স্থন পব জায কেঁ চাহী। ওহি ঠাম গেনা পব বাজসূয ঋা ঋশ্বৃমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত ঋছি। শশযান তীর্থ

বঁড্ড দুর্লভ তীর্থ স্থল অছি . জাহি ঠাম কাতিক পূর্ণিমা মে সরস্বতী নদি মে স্নান করলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি আ ও সাক্ষাত শিব সন কান্তিমান ভঽ জাযত অছি । জে কেও কপাবকোঠি তীর্থ মে জা কে নেম নিষ্ঠা সঁ স্নান কঽ দেবতা আ পিতর কের পূজা করৈত ছথিন ,হুনকা দস হজার গোদানক ফল মিলৈত অছি । ও অপনা কুল কের উদ্ধার সেহো কঽ দৈত ছথিন । কপাব কোঠি তীর্থক বাঁদ রুদ্র কোঠি মে গমন কর'ক চাহী ,জাহি ঠাম পহিনে কতেকো ঋষি লোকনি ভগবান শিবক দর্শনক ওচ্ছা সঁ ধ্যান লগেনে ছলাহ । ওহি ঠাম স্নান করলা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ কুলক উদ্ধার সেহো হোযত অছি । তদন্তর সঁগম তীর্থ জায কে চাহী আ ওহি ঠাম সরস্বতী নদি মে ভগবান জনার্দনক উপাসনা কর'ক চাহী । এহি ঠাম স্নান করলা সঁ লোকনি পাপ মুক্ত ভঽ জাযত ছথি আ হুনকা শিব লোক মিলৈত ছৈন ।

তদন্তর কুরুক্ষেত্রক যাত্রা কর'ক চাহী জাহি ঠাম গেলা সঁ সমস্ত প্রাণী পাপমুক্ত ভঽ জাযত অছি । কুরুক্ষেত্র মে সরস্বতী নদীক কছের মে এক মাস ধরি নিরাস কর'ক চাহী । জে কেও মন সঁ কুরুক্ষেত্রক চিন্তন করৈত অছি , হুনকর সর পাপ নষ্ট ভঽ জাযত অছি । ওহি ঠাম সঁ সতত নাম সঁ পসিদ্ধ তীর্থ স্থল পর জায কে চাহী , জাহি ঠাম ভগবান বিষ্ণু সদিখন বিরাজমান রহৈত অছি । জে কেও এহি তীর্থ স্থল পর স্নান করৈত অছি ,ও ভগবান বিষ্ণুক দর্শন করৈত অছি । তকর বাঁদ পবিপ্লর নাম সঁ তীন্ন লোক মে বিখ্যাত তীর্থ স্থল পর জাযকে চাহী , ওহি ঠাম গেলা সঁ অগ্নিষ্ঠোম আ অতিবাত্র যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তপেশ্চাত তীর্থ সেরী লোকনি কেঁ শান্নিকিনি নাম সঁ স্থল পর জায কে চাহী । ওহি ঠাম দশাশ্বমেধ ঘাঠ পর স্নান কর'ক চাহী । তপেশ্চাত পঁচনদ মে জা কে নিযমিত ভোজন করৈত নেম নিষ্ঠা সঁ নিরাস করী । ওহি ঠাম কোঠি তীর্থ মে স্নান করলা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তপেশ্চাত পরম উত্তম রাবাহ তীর্থক যাত্রা কর'ক চাহী , জাহি ঠাম ভগবান বিষ্ণু রাবাহ রূপ ধারণ কেলে ছলাহ । এহি তীর্থ স্থল পর নিরাস করলা সঁ অগ্নিষ্ঠোম যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তদন্তর জযিনি মে সোমতীর্থ স্থল দিস জাযরাক চাহী । ওহি ঠাম নহেলো সঁ বাজসূয যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । গুতশৌচ স্থল পর রুকলা সঁ পুণ্ডবীক যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । পম্পা নাম সঁ তীর্থ তীন্ন লোক মে প্রসিদ্ধ অছি , জাহি ঠাম নহেলো সঁ সর কামানাক পূর্তি ভঽ জাযত অছি । কাযশোধন তীর্থ মে নহেলো সঁ শৈবীরক শুদ্ধি

হোযত শ্বছি , এহি মে থোড়রক্ষ সঁদেহ নহি শ্বছি । জিনকব শৈবীব শ্বৈক্ষ ভহ জাযত শ্বছি ,ও কন্যাণময উঁত্তম নোক পারৈত ছথি । তকব ব়াঁদ নোকোঙ্কাব নাম সঁ তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী , জাহি ঠাম সরহেক উঁপেত্তিক কাবণহৃত ভগরান রিষ্ণু সর নোকনি কেঁ উঁদ্ধাব কেনে ছনাহ । ওহি ঠাম নহেনো সঁ সর পবিজন কেঁ উঁদ্ধাব ভহ জাযত শ্বছি । জে কপিনা তীর্থ মে ব়্বক্ষচর্যক পানন কবৈত একাগ্রচিত্ত ভহ দের শ্বা পিতবক পূজন কবৈত শ্বছি , ও এক সহস্র কপিনা দানক ফন পারৈত ছথি । জে সূর্য তীর্থ মে নহা কহ মন কেঁ কাবূ মে বাখি উঁপরাস পবাযণ ভহ দেরতা শ্বা পিতবক পূজা কবৈত ছথি , ষ্মনকা শ্বগ্নিষ্টোমক যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি শ্বা ও সূর্য নোক জাযত ছথি । গোভরন তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত শ্বছি ।

তদন্তব ব়্বক্ষারর্তক যাত্রা কব'ক চাহী । ব়্বক্ষারর্ত মে স্নান কবনা সঁ নোকনি কেঁ ব়্বক্ষনোক মিনৈত শ্বছি । ওহি ঠাম সঁ তীর্থ স্থন ঘুমৈত ফিবৈত কাশীশ্বব তীর্থ মে স্নান কব'ক চাহী । এহি সঁ সর বোগক নাশ ভহ জাযত শ্বছি শ্বা ব়্বক্ষনোক মে স্থান মিনৈত শ্বছি । তদন্তব শৌচ-সঁতোষ শ্বাদি নিযমক পানন কবৈত শীতরন মে জায কে চাহী । ওহি ঠাম পৈঘ দ্বর্নভ তীর্থ স্থন শ্বছি , জাহি ঠাম গেনা সঁ মাত্র এক দণ্ড মে নোকনি পরিত্র ভহ জাযত ছথি । ওহি ঠাম দোসব তীর্থ সেহো শ্বছি , জাহি ঠাম স্নান কবনা সঁ সর দ্বঃখ দূব ভহ জাযত শ্বছি । স্বর্ণনোমাপনযন নাম সঁ তীর্থ মে প্রণাযাম কহ জিনকব শ্বন্তঃকবণ পরিত্র ভেন শ্বছি ,ও পবম গতি পারৈত ছথি ।

তপ্েশ্বাত্ নোকরিখ্যাত মান্বষ-তীর্থক যাত্রা কবরাক চাহী । মান্বষ-তীর্থক সঁরঁধ মে কহন গেন শ্বচি জে কোনো সময মে র়্যাধক ব়াঁণ সঁ পীড়িত গ্রঞ্জ মৃগ এহি সবোরব মে ফদি গেন ছন । ওহি মে গোতা নগেনাক উঁপবান্ত ও মান্বষ শৈবীব পারি নেননি । তখনহি সঁ ঞা মান্বষ তীর্থ নাম সঁ রিখ্যাত ভহ গেন । এহি তীর্থ মে নহা কহ ব়্বক্ষচর্যক পানন কবৈত জে ধ্যান নগারৈত শ্বছি , ষ্মনকব হৃদয সর পাপ সঁ শ্বৈক্ষ ভহ জাযত শ্বছি শ্বা ও সূক্ষনোক মে প্রতিষ্ঠিত ভহ জাযত ছথি । মান্বষ তীর্থ সঁ প্বর দিস এক কোসক ব়াঁদ শ্বাপগা নাম সঁ রিখ্যাত একটা নদি ব়হৈত শ্বছি । ওহি ঠাম জা কেঁ জে কেও দেরতা শ্বা পিতবক উঁদ্দেশ্য সঁ সাঁরাক ব়নন ভোজন দান কবৈত শ্বছি র একক্ষ টা ব়াভন কেঁ ভোজন কবারৈত ছথি তহন

হ্মনকা কোঠি ব্রাহ্মণ ভোজনক ফল মিলৈত অছি । ওহি ঠাম নহেলোক বাদ দেবতা আ পিতবক পূজন কহ এক বাতি রুকনা সঁ অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তপেশ্চাত ব্রহ্মাব্রত্স তীর্থ জাযকে চাহী । ওহি ঠাম সপ্তর্ষি লোকনিকক ক্ষেত্র মে আ মহাত্মা কপিলক ক্ষেত্র মে স্নান কহ ব্রহ্মা জীক দর্শন কবৈত অছি , ও পবিত্র আ জিতেন্দ্রিয ভহ জাযত অছি । সব পাপ সঁ মুক্তি ভেলাক কাবণ ও ব্রহ্মলোক মে জাযত ছথি ।

তপেশ্চাত শুক্ল পক্ষক দশমী কে পুণ্ডরীক তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ পুণ্ডরীক যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । ওহি ঠাম সঁ ত্রিবিষ্টপ তীর্থ দিস গমন কব'ক চাহী । ওহি ঠাম বৈতবণী নাম সঁ একটা পবিত্র নদি আছি , জে সব পাপক মুক্তি প্রদাযনী অছি । এহি নদি মে স্নান কবনাক বাদ শূলপাণি ভগবান শংকবক পূজন কবনা সঁ মানুষক হৃদয সব পাপ সঁ শুদ্ধ ভহ জাযত অছি আ হ্মনকা পবম গতি মিলৈত অছি ।পানিখ্যাত নাম সঁ প্রসিদ্ধ তীর্থ মে স্নান আ তর্পণ কবানা সঁ বাজসূয যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । তপেশ্চাত বিশ্বরিখ্যাত মিশ্রিখক যাত্রা কব'ক চাহী । স্বনন মে আযন অছি জে মহাত্মা ব্যাস জী সব তীর্থক সম্মেলন এহি ঠাম কেনে ছলাহ । জে কেও এহি তীর্থ মে স্নান কবৈত অছি,মানু ও সব তীর্থ মে স্নান কহ লেনক ।

ঋণান্ত কুপ মে জা কে জে কেও এক সেব তিলক দান কবৈত অছি , ও সব ঋণ সঁ মুক্ত ভহ পবম সিদ্ধি পাবি লৈত ছথি । বেদী তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । অহন আ সুদিন নাম সঁ দু টা দুর্লভ তীর্থ স্থল অছি । এহি মে স্নান কবনা সঁ সূর্যলোকক প্রাপ্তি হোযত অছি । মৃগধূম তীর্থ তীনু লোক মে প্রসিদ্ধ অছি । ওহি ঠাম রুদ্রপদ মে স্নান আ মহাত্মা শূলপাণিক পূজন কবনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । কোঠিতীর্থ মে স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । বামন তীর্থ এহি তীনু লোক মে প্রসিদ্ধ অছি । ওহি ঠাম বিষ্ণুপদ মে স্নান কহ ভগবান বামনক পূজন কবনা সঁ তীর্থ যাত্রীক হৃদয সব পাপ সঁ শুদ্ধ ভহ জাযত অছি ।কুলম্প্লন তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ সমস্ত কুল পবিত্র ভহ জাযত অছি । শালিহোত্র নাম সঁ এক টা তীর্থ স্থল অছি, জে শালি সূর্য নাম সঁ প্রসিদ্ধ অছি । ওহি ঠাম বিধি-বিধান সঁ স্নান কবনা পব সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি। সবস্বতী নদি মে শ্রীকুঞ্জ নাম সঁ একটা তীর্থ স্থল অছি , জাহি ঠাম স্নান কবনা সঁ

অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি । তপেশ্চাত ব্র্বহ্মাজীক উত্তম স্থান প্বঞ্কবক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ ব্র্বাহ্মণত্বক প্রাপ্তি হোযত অছি আ চিত্ত শুদ্ধ ভহ পবম গতি মিনৈত অছি ।

কপানমোচন তীর্থ সর পাপ কেব নাশক অছি । ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ নোকনি সর পাপ সঁ মুক্ত ভহ জাযত অছি । ওহি ঠাম সঁ কার্তিকেযক পৃথূদক তীর্থ দিস গমন কব'ক চাহী , জে তীন্ব নোক মে রিখ্যাত অছি । ওহি ঠাম দের আ পিতবক পূজন হেত্ত স্নান কব'ক চাহী । জাহি সঁ সর পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি , চাহে ও জান র অনজান মে ভেন হো । এতরে মহি ষ্মনকা অশ্বমেধ যজ্ঞক ফন সেহো মিনৈত অছি আ সূক্ষ্ম নোক জাযত ছথি । ক্বরুক্ষেত্র কেঁ পরিত্র কহন গেন অছি , ক্বরুক্ষেত্র সঁ পরিত্র সবস্বতী নদি অছি ,অক্ষ সঁ রেসী পরিত্র পৃথূদক তীর্থ কহন গেন অছি । এহি তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ প্বনর্জন্ম নহি হোযত অছি । শ্রীসনক্বেমাব আ মহাম্মো র্যাস সেহো এহি তীর্থক মহিমাক গান কেননি অছি । রেদ মে সেহো একব মহত্ত্ব রতাওন গেন অছি । পৃথূদক তীর্থ সঁ রেসী পারন তীর্থ কোনো দোসব তীর্থ নহি অছি । ওহি ঠাম মধুস্বব নাম সঁ একটা তীর্থ স্থন অছি , জাহি ঠাম স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত অছি । তপেশ্চাত সবস্বতী আ অরুণাক রিশ্বরিখ্যাত সঁগম জাযকে চাহী । ওহি ঠাম তীন বাতি উপরাস আ স্নান কবনা সঁ ব্র্বহ্মহত্যাক পাপ সঁ মুক্তি মিন জাযত অছি । সঁগহি সঁগ তীর্থ সেরী নোকনি কেঁ অগ্নিষ্টোম র অতিবাত্র যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি আ ও অপন সাত পীঢি কেব উদ্ধাব কহ দৈত অছি , এহি মে কোনো সন্দেহ নহি । তকব রাদ শৈতসহস্র আ সাহস্রক তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী । এহি মে স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত অছি । ওহি ঠাম দান র উপরাস কবনা সঁ সহস্রগুণা রেসী ফন মিনৈত অছি । তদন্তব বেণুকা তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কহ দের আ পিতবক পূজন কবনা সঁ সর পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি আ অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি । জে কেও ক্রোধ আ জিতেঁদ্রিয ভহ রিমোচন তীর্থ মে স্নান কবৈত ছথি , ষ্মনকব প্রতিগ্রহজনিত সর পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি ।

তদন্তব জিতেঁদ্রিয ভহ ব্র্বহ্মচর্য ব্রতক পানন কবৈত পঁচরষ্ট তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ মহান প্বণ্য হোযত অছি আ সূক্ষ্ম নোক মে স্থান মিনৈত অছি । ওহি ঠাম স্বযঁ যোগেশ্বব শির রিবাজমান ছথি । ওহি ঠাম দেরেশ্বরক পূজন কবনা সঁ মান্বষ কেঁ সিদ্ধি মিন জাযত ছৈন । ক্বরুক্ষেত্র মে ঔঁদ্রিয-নিগ্রহ আ ব্র্বহ্মচর্যক পানন কবৈত স্নান কবনা সঁ সর পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি আ রুদ্রনোক মে স্থান মিনৈত অছি । একব ব্রাঁদ নিযমিত আহাবক সেরন কবৈত র শৌচাদিক নিযমক

পানন কবৈত সূক্ষ্মদ্বাব দিসক যাত্রা কব'ক চাহী । এহি সঁ শ্বগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি শ্বা ব্রঁবহ্মনোক মে স্থান সেহো মিনৈত শ্বছি । নাবাযণ র পদ্মনাভ ক্ষেত্র মে জ্বনক দর্শন কবনা সঁ তীর্থ সেরী শৌভাযমান কপ ধাবণ কহ রিষ্ণুধাম জাযত ছথি । সর দেরতাক তীর্থ মে স্নান মাত্র সঁ নোকনি সমস্ত দুঃখ সঁ মুক্ত ভহ শির সন কাঁতি মান ভহ জাযত ছথি । তপ্শ্চাত শ্বস্থিপ্রবক যাত্রা কব'ক চাহী । এহি তীর্থ স্থন পব দেরতা শ্বা পিতবক পূজন কবনা সঁ শ্বগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি । ওহি ঠাম গংগাহ্রদ নাম সঁ একটা কূপ শ্বছি , জাহি মে তীন কোটি তীর্থক নিরাস শ্বছি ।এহি মে স্নান কবনা সঁ ব্রঁবহ্মনোক মিন জাযত শ্বছি । শ্বাপগা মে স্নান শ্বা মহেশ্বরক পূজন কবনা সঁ পবম গতি মিন জাযত শ্বছি শ্বা নোকনি শ্বপনা ফ্লনক উদ্ধাব সেহো কহ দৈত শ্বছি ।

তপ্শ্চাত সন্নিহিতা নাম সঁ তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী , জাহি ঠাম ব্রঁবহ্মা শ্বাদি দেরতা শ্বা তপোঘন ঋষি নোকনি প্বণ্য সঁ যুক্ত ভহ সর মহিনা মে একঠাম শ্বারৈত ছথি । সূর্যগ্রহণক সময সন্নিহিতা মে স্নান কবনা সঁ এক সএ শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি । পৃথ্বী শ্বা শ্বাকাশী মে জতেক তীর্থ,জনাশয,কূপ শ্বা প্বণ্য মন্দিব শ্বছি, সর মাসক শ্বমারস কেঁ নিশ্চয সন্নিহিতা মে শ্বারৈত ছথি । শ্বমারস শ্বা সূর্যগ্রহণক সময এহি ঠাম স্নান কবনা সঁ সহস্র শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি । এহি তীর্থ মে স্নান কবহ রানা নোকনি রিমান পব বৈসি ব্রঁবহ্মনোক জাযত ছথি। নৈমিষাবণ্য নাম সঁ একটা পরিত্র তীর্থস্থন শ্বছি । তীন্ব নোক মে ফ্লকুক্ষেত্র কেব মহত্ত্ব দেন জাযত শ্বছি । হরা রযাব সঁ উড়ন ফ্লকুক্ষেত্রক গর্দা দেহ মে নাগি জায তহ পাপী কে সেহো পবমগতি মিন জাযত শ্বছি । ফ্লকুক্ষেত্র ব্রঁবহ্মরেদী পব স্থিত শ্বছি । ত্ত ব্রঁবহ্মর্ষি নোকনি সেরিত প্বণ্যময তীর্থ স্থন শ্বছি । জে কেও এহি ঠাম বহৈত ছথি হ্মনকা কখনহ্ম শৌক নহি হোযত ছৈন । তবণ্ড সঁ নহ কে শ্ববণ্ডক ধবি শ্বা বামহ্রদ সঁ নহ কে মচক্রুকতক ধবি ক্ষেত্র কে ফ্লকুক্ষেত্রক সঁজ্ঞা দেন গেন শ্বছি ।

ফ্লকুক্ষেত্র সঁ তীর্থ যাত্রী কে ধর্মতীর্থ দিস গমন কব'ক চাহী, জাহি ঠাম ধর্ম উত্তম তপ কেনে ছনাহ । ধর্মশীন নোকনি একাগ্রচিত্ত ভহ ওহি ঠাম স্নান কবৈত ছথি , ও শ্বপন সাত পীঢী ধবি পরিত্র কহ দৈত ছথি । ওহি ঠাম সঁ কনাপ রনক যাত্রা কব'ক চাহী ; এহি তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ শ্বগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি শ্বা ও রিষ্ণুনোক জাযত ছথি ।

..............শৈষ শ্বাগিনা শ্বংক মে

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.लाल दवे कामत-कोय बोलतै रे !



लाल दवे कामत

कोय बोलतै रे !

आई काल्हि शोसल मीडिया पर एक ट्रेंड खूब जोरगर रूपेँ सुनाए पड़ैत छैक। कोई बोलतै रे , से शब्द आ वाक्य जेना पूर्वी मिथिलाक' उच्चारण होईछ ,तेनाहि ध्वनि सुनि पड़ैत अछि। कियो बजताह की? एहिं शब्द केँ सुपौल , सहरसा, मधेपुरा,अररिया, खगड़िया आ कटिहार जिलाक आदि ठाम प्रयुक्त शब्द आ वाक्य केँ सोतियामी मैथिली सँ पृथक बूझल आ सुनल जाईछ- कोई बोलतै रे '। भाषायी आधार पर मैथिली बोलचाल भारत आ नेपाल दू देशके मिथिलांचल प्रक्षेत्रमे होईत अछि। मैथिली बहुत पुरान समृद्ध भाषा छी, तकरा ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति'क रचना सँ प्रमाण रूपेँ जानल जाईछ। संस्कृत सँ अबहट आ जनमानस केर वाणी मैथिली भाषाकेँ बाजय लेल कोनू विशेष भांगठ नहिँ रहैछ। मुदा पुरातनकाले सँ सामाजिक मान्यतामे कहल गेल छैक जे कोसभरि पर पानि आ तीनकोस दुरी पर

वाणीमे वदलाउ स्वत: रहैछ। से हम ठिके तीन कोस हटनी - नौआबाखर सँ अपन मातृक बालपनमे गमहरिया,पिसियौत भायके सासुर पड़री ,बहिनक सासुर केवटापटी - रसुआर आ पितियौत बहिन के सासुर जोबहा अरहा तथा बाबुक मातृक सुकमारपुर नारेदिगर प्रगाना पहिले खेप गेलहुँ तँ ओतुका वार्तालापमे अपनाकेँ असहजताक अभास भेल रहय। ओहि गाममे सबके सब यौ सम्बोधनक बदलामे जेष्ठ श्रेष्ठ लेल गौ! आ अपना सँ छोट वयस लेल रौ एवं छोट वालिका ; छौरी लेल गे शव्द क' उच्चारण कयल जाईत छल। से अपना सँ पैग स्त्री सम्बन्धमे यथा- माय,बहिण, दीदी,बड़की काकी - मामी , नानी ,मैयाँ लेल हे गे ! शव्द बाजल जाइ छलैक। किनको पैघ लोकके दुरस्थ सँ शोर पारय लेल हे हौऊ ! आ अपना सँ छोट वयक्रमके छौड़ाकेँ चिकैरके बजाओल गेनाई पर - हे रे हे ...! शव्द बाजल जाइ। तहिना चद्दरि(शाल) के लेल एकलाई शव्द आ कमीज शव्द लेल अंगा तथा ब्लौज 'क जगह आँगी कहल जाई। सारी केर जगह नुआँ आ धोतीके लेल ननकिलाठ कहैत सुनि अचरज हुअय। तकियाके लेल पर्यायवाची शब्द सीरमा (बार्ली) आ पनही लेल जूता तथा सटका लेल पेना बाजल जाईक। हांसु कैँ कचिया, दबियाके पगारिया आ बसुला कहल जाए तँ बैसला कैँ कोन ओजार शव्द दै से स्मरण नहिं अबैत अछि ।

एहिं तरहेँ बालमन पर नव शव्द ज्ञान हेबाक बुझबाक लाभ ओहि समयके यात्रा सं भेल छल। से एकहि गाममे सवर्ण तबकामे जे मैथिली सुसंस्कृत रूपेँ बाजल जाईछ ,ओहि गामक पिछरल आ अधिक पिछरल समाजमे ठेंठी मैथिली भाषा रूपेँ बाजल जाईछ। ताहि गामक दलित - महादलित समाजमे अपभ्रंश मैथिली बजैत सुनल गेल छैक। जहन की एतय तीन कोस बाला भौगोलिक दुरी नहिं न रहैछ,आ एके राजस्व गामक टोल भिन्न - भिन्न बसाबट रहैछ। मुदा ताहिके मैथिली भाषा नहिं मानि ; बोली-वाणी क्षेत्रीय बुझल जाईत छैक। एखन २ हजार लगधक लेखकमे आधा लोक जे शिक्षक

संवर्ग सँ छथि,ओ शपथपत्र बनेबामे आ मानक तय करबाक फिराकमे राति -दिन लागल छथि। से कदाचित पाठक वर्ग लाखोंमे होयत जे हापिडिपी बनबै सँ अपनाकेँ फराक रखने अछि। मैथिली मानक मिथिलांचलमे रहनिहार बेसी आवादी'क मातृभाषा सँ हुअय। जे कियो तहन - तखनके जगह तब ' शव्द' बजैत आबि रहलैन हन् ,तेकर परोक्षरूप सँ वहिष्कार करैक ई अन्दरूनी महा षड्यंत्र रचल जा रहल अछि। तेँ मिथिला राज्य निर्माण केर माँग जाधरि एतुका सर्वहारा वर्ग नहिँ उठाओत ,ताधरि ई माँग कमजोर बनले रहत। जा धरि मैथिली बजनिहार क' बीच ई गहींरपन भेदभाव नहिं मिटत ,तँ जोर कतय सँ आओत? तेँ मैथिली मानक लेल सब बिन्दु पर सम्यक विचार,सब वर्गक हीतमे मुदा उठय। मैथिली केर जे क्षेत्रीयता भाषामे फरक छै, तकर समन्वय आवश्यक अछि। डॉ० अशोक झा अबिचल ऐ संदर्भ म विस्तृत आलेख कोसी संदेश त्रिमासिक पत्रिका म लिखने रहथि। डॉ० महेंद्र नारायण राम करैत छथि " लोक-संस्कृतिक मूलमे जे जन समूह रहैछ, जेनाकि दलित, शोषित पीड़ित एकरा पिछरलक संज्ञा सँ अविहित कयल जाइत अछि से असली मैथिली जीवी छै। मैथिली भाषा ओकरा लोकगाथामे , लोककथामे लोककला, लोकगीत लोकसंगीत,लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोकनाच, लोकवाहा,पावैन तिहार,भावभगैत, गहबरगीत रहन- सहन, खाइन-पीअन आ पेनहब-ओरहबमे रचैत बसैत य। श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीके उक्ति छैन-"सवर्ण समाज आब गाम देहातमे बढ़ कम रहैत छैथ। हुनक बाल बतरू सेहो मातृभाषा मैथिलीमे कमे परंच हिन्दी अंग्रेजी आ आन विदेशी भाषा केँ अपनौने जा रहल छैक। एक सरकारी जातीय सर्वेक्षण सँ थाह चलैत अछि-निशन्न मैथिली भाषाक प्रयोग कम साक्षर आ अनपढ़ गरीब गुरबा केर द्वारा होईछ । ओकरे कंठ सँ विशुद्ध मैथिली बहराईत अछि आ ओ ऐ मैथिली भाषा केँ जिआके अक्षण्णुन आईधरि रखने अछि। ई समाज मैथिली नाम पर सुविधा वंचित रहल, एकर हिस्सा बखरामे लुट मचेनहारके सब निठाहे

देख लैत य। ई एक समाजशास्त्रीए ज्वलंत समस्या उत्पन्न कयल जा रहल छैक। .....से कोय बजतै रे!

-लाल देव कामत मो० ७६३१३९०७६१

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.कुमार मनोज कश्यप- लघकुथा- पारस



कुमार मनोज कश्यप

लघकुथा- पारस

सूर्यनाथ भोरे केबाड़ खोलि चौखटि सS जखने डेग बाहर देलनि तS देखलनि ओसारा पर कुक्कुर पड़ल। कतबो ‘’हट्ट- हट्ट’’ आ लाठी फटकारला के उपरांतों कुक्कुर नहिं उठल; तS बुझि गेला जे मुईल पड़ल अछि। भरि मोन जते जे गारि अबैत छलनि से कुक्कुर पोसनिहार के पढ़लनि। फेर सोमना के ताकS बिदा भेला तS ओहो गेल छल सुगर चड़बय। पहर दिन बितला के बाद सोमना बड़-बड़ाईत हाजिर भेल। गमछा सS मुरेठा बन्हलक फेर डाँड़ सS रस्सी खोलि कुक्कुर के पछिला दुनू पैर मे ससरफानी बान्हि घिसिया कS लS जाय लागल। 'हाँ .... हाँ! .... थम्ह .... थम्ह! रे अलबटहा! कि करै छैं ई? सुझै नै छौ कुक्कुर के मुँह सS शोणित बहै छै? सौंसे घर-द्वार घिनेलै रे अन्हरा! कते भारी छै ई रे? कोरा मे उठा लेबैं से नहिं होई छौ? हरामखोर नहिंतन! पाई लेता धरा

कS आ काज करता बेगारी जकाँ!’’ - सूर्यनाथ अपन सभटा भड़ास सोमने पर निकालि लेबS चाहैत छलाह।

- 'थम्हू! की बाजै छी आहाँ? उपकार मानियौ एकर; नहिं तS सड़ि कS गन्हाईत तS घर-द्वार सभ छोड़ि कS पड़ाय पड़ितै।' कनियाँ के बात सभ के थतमता देलक। ओ फेर सोमना के देखि कS बजलीह - 'आहाँ अपन काज करू, शोणित के हम निपि कS साफ कS देबै। आ हे! फूर्ति सS एकरा फेकि कS हाथ-मूँह धोने आऊ। ताबत हम चाह-जलखै के व्योंत कS कS रखैत छी।’’

सोमना के बकझड़ लागि गेलै - साँच छै ई कि ओ ठाढ़े-ठाढ़ सपना रहल अछि ?

-कुमार मनोज कश्यप सम्प्रति: भारत सरकारक उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 # 9810811850
ईमेल: writetokmanoj@gmail.com

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.आचार्य रामानंद मंडल-मैथिली मानकीकरण/ महाकुंभ



आचाय र्रामानदं मडंल

मैथिली मानकीकरण/ महाकुंभ

१

मथिली मानकीकरण

आइ कालि एगो नव मैथिली शोध संस्थान जोर शोर से मैथिली के मानकीकरण पर भीरल हय। नेपाल के अंतरराष्ट्रीय मैथिली भाषाविद डॉ रामावतार यादव,वरीय आलोचक डा रमानंद झा रमण,वरीय साहित्यकार डा भीमनाथ झा आ अन्य के समूह द्वारा मैथिली के स्थिरीकरण के लेल

मानकीकरण के आवश्यकता बतैलन।समुह द्वारा मैथिली के वर्तनी के स्थिरीकरण के दिशा मे काज कैल गेल।इहो बताएल गेल कारक के विभिक्त जोर के लिखल जाए। कारण कि आबि मैथिली विश्व भाषा बन गेल हय।

परंतु समुह मैथिली के विभिन्न शैली यथा अंगिका, बज्जिका, खोरठा आ नागपुरी पर कोनो विचार न कैलन।समुह अतीत के विचार से प्रभावित हो अइ सभ के उपेक्षित कैलन जेना अतीत मे करैत रहलैन ।
मैथिली लोकभाषा के पाणणि के व्याकरण जेका संस्कृतनिष्ठ बनाके मैथिली के लोक से दूर कै देलन।अइ संदर्भ मे एगो घटना के स्मरण आवश्यक हय जे एकबार प्रसिद्ध साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल के रचना के बर्तनी के बदल देल गेल रहय।परंच बाद मे इ विदेह पत्रिका वोइ रचना के हु बहु हु प्रकाशित कैलन।बाद मे जगदीश प्रसाद मंडल के उपन्यास पंगु पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत कैल गेल।

आब विचार के विषय इ हय कि केन्द्रीय मैथिली अर्थात मानक मैथिली जेकरा सोतीपुरा मैथिली कहल जाइ हय मे तत्सम शब्द के प्रयोग ज्यादा होइ हय जौं कि अंगिका -बज्जिका मे तद्भव आ देसी शब्द के प्रयोग होइ हय। वर्तनी मे जंहा मैथिली मे ण,ष,ऋ के प्रयोग कैल जाइ हय त इ बज्जिका मे ण,ष,ऋ के प्रयोग निषेध कैल गेल हय।ण के बदले न,ष के बदले स आ ऋ के बदले रि के प्रयोग कैल जाइ हय। तुलनात्मक अध्ययन कैला पर पायल जाइ हय कि एकरा उच्चारण से कोनो मतलब न हय बल्कि वर्तनी मे भिन्नता के द्योतक हय। एकटा गाम आ एकटा समाज के व्यक्ति के वर्तनी मे भिन्नता पायल जाइत हय। यथा - अतीत मे लोहना मधुबनी के विद्वान रमाकांत झा आ विद्वान कांचीनाथ झा किरण। वर्तमान मे वोही गाम के कथाकार अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास।
मिथिला के विभिन्न क्षेत्र वर्तमान मे बज्जिकांचल आ अंगिकांचल हो आ अतीत के मिथिला आ तिरहुत क्षेत्र के मैथिली भाषा भिन्नता के बोली कह

के खारिज करनाई अपने पैर पर अपने कुरहर चलनाइ साबित होयत। भिन्न-भिन्न क्षेत्र के शब्द आ वर्तनी के समेकित करनाई आवश्यक प्रतीत होइ हय। शब्द आ वर्तनी के पर्यायवाची बनाबे के आवश्यकता हय।परंच वर्तनी के नाम पर वर्तमान संपादक महाकवि विद्यापति के अवहट्ट रचना के शुद्ध मैथिली बनाबे पर भिरल हतन।

२

महाकुंभ

सनातन धर्म मे छह बर्ष पर अर्धकुंभ आ बारह बर्ष पर कुंभ के विधान हय। अर्धकुंभ छह बर्ष पर प्रयागराज आ हरिद्वार में लगय हय।उत्तर प्रदेश सरकार कुंभ के नाम महाकुंभ क देलन हतन। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मे आइ काल महाकुंभ लागल हय।

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के उपरांत अमृत कलश प्राप्त भेल रहय। अमृत पान के लेके देव आ दानव मे पहिले हम त पहिले हम पान करब के लेल संघर्ष भे गेल।छीना झपटी में अमृत कलश से अमृत के बूंद चार स्थान पर गिर पड़ल। चार स्थान प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन आ नासिक हय। अमृत वितरण के लेल देव विष्णु मोहिनी रूप धारण क के अमृत वितरण कैलन।

कुंभ स्नान मे नागा साधु के प्राथमिकता देल जाय हय।२०२५मे कुल छह शाही स्नान हय। पौष पूर्णिमा १३जनवरी २०२५के प्रथम शाही आ द्वितीय मकर संक्रांति १४ जनवरी २०२५ के स्नान संपन्न भे गेल हय। तृतीय मौनी अमावस्या २९ जनवरी २०२५, चतुर्थ वसंत पंचमी ०३ फरवरी २०२५ पंचम माघी पूर्णिमा १२ फरवरी २०२५ आ अंतिम शाही स्नान २६फरवरी २०२५के हय।

वर्तमान महाकुंभ से आयल समाचार में सोशल मीडिया पर कुछ समाचार काफी बायरल हय।जैमे एगो माला बेचेबाली बंजारण लरकी मोनालिसा नाम से चर्चित हय। जेकर सुंदरता खास क के नीलगर आंख शोहरत बटोरले हय।वोकर सुंदरता के कारण वोकर ब्यापार सेहो प्रभावित भेल।वोकर कहना हय कि लोग हमर भिडियो बनबैय परंच माला न खरीदय हय।आब हमर भिडियो वोहे बनायत जे हमरा से कम से कम एगो माला खरीदत।आइ मोनालिसा महाकुंभ के मोहिनी बनल हय।

दोसर आइआइटियन बाबा मुकेश सिंह खुब बायरल हय।वो अपन बुद्धिमत्ता से लोग बड प्रभावित क रहल हय।परंच कुछ उटपटांग बयान से हुनका संबंधित अखाड़ा से निष्कासित क देल गेल त दोसर अखाड़ा अपना लेलक।अपना पिता के बारे मे व्यक्त विचार सनातन परंपरा के विपरीत हय।

तेसर नकली साधु के नाम पर लोग साधु से बदतमीजी कैल देखल जा रहल हय।

चौथा अघोरी नागा लोग के काफी प्रभावित क रहल हय।

पंचम माडल लरकी हर्षा नकली जटा के कारण विवादित रहल।वोकरा संबंधित अखाड़ा से निष्कासित कैल गेल।

महाकुंभ में प्राकृतिक आपदा अगलगी चर्चा में रहल।दू गो सेक्टर में आग लग गेल। सैकड़ों टेंट काटेज आ कुटिया जल के राख भे गेल। आपदा प्रबंधन के तत्परता से कोनो जान के हताहत न भेल। एकटा महिला कहैत पायल गेल कि जे हम वस्त्र पहिनले छी वोकरा छोड़ के कुछियो न बांचल।हमर भगवान सेहो जर के राख भे गेल।

सम्प्रति पंद्रह सौ लोग नागा साधु बनलन। एगो फिलमी हिरोइन ममता कुलकर्णी सेहो किन्नर महामंडलेश्वर बनलन।

मौनी अमावस्या २९ ननवरी २०२५के भगदड़ मे प्राप्त सूचना के आधार पर १२ श्रद्धालु के मृत्यु भे गेल आ सैकड़ों घायल भे गेल।

महाकुंभ लागल हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सीतामढ़ी।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

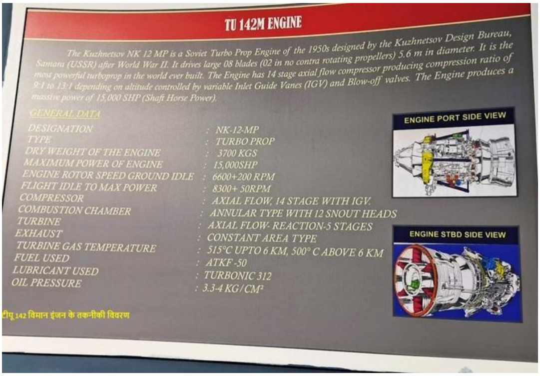
२.७.प्रणव कुमार झा- टी.यू. 142 विमान आ आईएनएस कुरसुरा पनडुब्बी के झलक (यात्रा संस्मरण)



प्रणव कुमार झा

टी.य. ू142 विमान आ आईएनएस कुरुसरा ु पनडुब्बी के झलक (यात्रा सस्मंरण)




TU 142M ENGINE
The Kuzhnetsov NK 12 MP is a Soviet Turbo Prop Engine of the 1950s designed by the Kuzhnetsov Design Bureau, Samara (USSR) after World War II. It drives large 08 blades (02 in no contra rotating propellers) 5.6 m in diameter. It is the most powerful turboprop in the world ever built. The Engine has 14 stage axial flow compressor producing compression ratio of 9:1 to 13:1 depending on altitude controlled by variable Inlet Guide Vanes (IGV) and Blow-off valves. The Engine produces a massive power of 15,000 SHP (Shaft Horse Power).
GENERAL DATA
DESIGNATION : NK-12-MP
TYPE : TURBO PROP
DRY WEIGHT OF THE ENGINE : 3700 KGS
MAXIMUM POWER OF ENGINE : 15,000SHP
ENGINE ROTOR SPEED GROUND IDLE : 6600+200 RPM
FLIGHT IDLE TO MAX POWER : 8300+ 50RPM
COMPRESSOR : AXIAL FLOW, 14 STAGE WITH IGV.
COMBUSTION CHAMBER : ANNULAR TYPE WITH 12 SNOUT HEADS
TURBINE : AXIAL FLOW- REACTION-5 STAGES
EXHAUST : CONSTANT AREA TYPE
TURBINE GAS TEMPERATURE : 515°C UPTO 6 KM, 500° C ABOVE 6 KM
FUEL USED : ATKF -50
LUBRICANT USED : TURBONIC 312
OIL PRESSURE : 3.3-4 KG/CM²
ENGINE PORT SIDE VIEW
ENGINE STBD SIDE VIEW
टीपू 142 विमान इंजन के तकनीकी विवरण


भारतीय सेना के विभिन्न मेडल आ ओकर डिजाइनर के विवरण


विराट टीयू 142 विमान के इंजन – रक्षा इंजीनियरिंग के एकटा भव्य नमूना


टीयू – 142 विमान के अंदर के दृश्य आ ऑक्सीज़न टैंक जाहि से विमान के पूरा
क्रू लेल 16 घंटा के ऑक्सीज़न सप्लाई भेट सकय छैक।


12
विराट टीयू- 142 विमान संग गौरवशाली क्षण


IN SE ASIA
आईएनएस कुरसुरा के अग्रभाग के आंतरिक दृश्य - टॉरपीडो फायर कंट्रोल
Without Camera Ticket do not take Photos or Videos
TORPEDO FIRE CONTROL
COMPUTER


टीयू 142 विमान के अगिला हिस्सा के अंदर के दृश्य


आईएनएस कुरसुरा पनडुब्बीक मनोरम छटा



समुद्रक सिहरन भरल लहर सभ आ अनन्त नीला आकाशक संगत विशाखपट्टनम शहर अपन विविधतासँ भरल आकर्षणक लेल प्रसिद्ध अछि। खास कऽ के औद्योगिक, व्यापारिक आ सामरिक महत्व के संगम अछि ई

शहर। एहि शहर के रामकृष्ण समुद्र तट एकटा आकर्षक स्थल अछि जतय प्रातः काल आ संध्याकाल मे सागरक लहरि के देखैत, गिनैत वा ओकरा संगे खेलाइत समय बितेनाई मोन के किछ काल लेल एकटा सुकून आ सुखद अनुभूति दैत छैक। एना अनुभव होइत छैक जे सागर के लहर सब भगवान जगन्नाथ के मधुर पावन स्पर्श आ गंध के अपना संग समेटने लऽ आबि रहल होई। कतेको लोक आ पर्यटक नित प्रातः आ संध्याकाल एहि मनोरम हवाखोरी के आनंद लैत अछि। एहि बीच हमरो ई आनंद लेबाक अवसर भेटल छल। एहि क्रम मे सागर किनारे टहलैत बौखैत एकटा आकर्षण के केंद्र देखय मे आयल - टि.य. ू142 विमान सग्रंहालय आ आईएनएस कुरसरा ु पनडुब्बी सग्रंहालय। इतिहास, विज्ञान आ वीरताक संगमक जीबैत-जागैत प्रमाण अछि ई संग्रहालय जे एहि सागर तट पर स्थित छैक। ई संग्रहालय मात्र एकटा ऐतिहासिक संरचना नहि, बल्कि आकाशीय आ पातालीय रणक्षेत्रमे भारतीय नौसेनाक अपराजेयता कैँ दर्शाबयवला प्रतीक छी। स्वाइत जिज्ञासा भेल त पहुंचलहु हमहु ऐ संग्रहालय के देखबाक लेल। संग्रहालय मे, बहुत रास गार्जियन सभ, बच्चा, बुढ़ नौजवान सभ टोली बना बना कऽ संग्रहालय के अंदर पहुँच रहल छलाह आ ओकरा माध्यम से अपन सेना के वीरता, तकनीकी आ इतिहास के अनुभूति कऽ रहल छलाह।

विशाखपट्टनमक गौरव: टि.य. ू142 सग्रंहालयक गाथा

विशाखपट्टनमक रामकृष्ण समुद्र तटक नजदीक, एकटा अद्वितीय संग्रहालयक रूपमे टि.यू. 142 विमानक संरचना स्थापित अछि। ई संग्रहालय मात्र एकटा ऐतिहासिक स्थल नहि, बल्कि भारतीय नौसेना आ ओकरा गौरवशाली गाथाक जीवन्त दस्तावेज छी। तीन दशक धरि भारतीय महासागरक चौकीदार आ पाकिस्तानी पनडुब्बी चालकक डरक प्रतीक रहल टि.यू. 142 आइ विश्रामक अवस्था मे अछि, मुदा ओकरा योगदानक गाथा

अखनो चिरस्मरणीय अछि जे ऐ म्यूजियम के माध्यम स दर्शकक मोन मे जीवंत भ जाय छैक।

1988 मे भारतीय नौसेना द्वारा टि.यू. 142 कें अपनायल गेल। एहि विमानक मूल उद्देश्य अमेरिकी पोलारिस पनडुब्बी-क लॉन्च बैलिस्टिक मिसाइलक परिप्रेक्ष्य मे प्रतिरोध क्षमता बढ़बए छल। ई सोवियत यूनियनक उत्कृष्ट सामरिक डिज़ाइन छल। एहि गहन गतिक विमानक डिज़ाइन ओहि समयक शीतयुद्धक सामरिक चुनौती कें ध्यानमे राखि कयल गेल छल। टि.यू. 142M, जे सोवियत डिजाइन ब्यूरो द्वारा निर्मित छल, अपन समयक एकटा अग्रणी प्लेटफॉर्म छल। शीतयुद्धक दौरान, ई विमान रूसी, यूक्रेनी आ भारतीय नौसेना लेल कार्यरत रहल। भारत लेल, ई विमान विशेष रूप सँ साझा कएल गेल छल, जे ओय समय मे सोवियतक भारतक संग विश्वासपूर्ण संबंधक संकेत अछि।

रूसक प्रसिद्ध ट्यूपोलेव डिज़ाइन ब्यूरोक अद्वितीय कृति टि.यू. 142 के निर्माण 1968 ई. मे भेल छल। ई विमान समुद्री गश्ती आ लंबा दूरीक पनडुब्बी-रोधी अभियानमे उपयोग कैल गेल छल। भारतीय नौसेनाक सेवा मे ई अद्वितीय विमान 1988 सँ 2017 धरि रहल। 'एलोसर्क बहादुर' नाम सँ प्रसिद्ध, ई विमान अपन समयमे नौसेनाक रीढ़ मानल जाइत छल। एहि इंजन कें विशेष रूप सँ समुद्री मिशन आ लंबा दूरीक गश्ती लेल डिजाइन कएल गेल अछि। रात्रिकालीन उड़ान आ ईंधन भरबाक सुविधा लेल विमानक नाक पर फ्लश लाइट आ ईंधन भरबाक प्रोब लगाओल गेल अछि।

डिजाइन आ सरंचना

टि.यू. 142 विमानक डिज़ाइन मात्र एकटा युद्धक यंत्र नहि, बल्कि एकटा

इंजीनियरिंग चमत्कार छी।

- आकार आ माप:
  - विंगस्पैन: 51.1 मीटर।
  - लबांई: 49.5 मीटर।
  - ऊँचाई: 12.12 मीटर।
  - प्रोपेलर व्यास: 5.6 मीटर।
- इंजन: चारि कुज़नेत्सोव NK-12MV टर्बोप्रॉप, जे 14,795 HP शक्ति उत्पन्न करैत अछि।
- गति: 925 किमी/घंटा।
- सवो सीमा: 13,000 किमी बिना ईंधन भरने।

शक्ति आ क्षमता

ई विमान अपन अत्याधुनिक सेंसर सभ, सोनार बुई आ मैग्नेटिक एनोमली डिटेक्टरक मददसँ पनडुब्बीक खोज आ नाश करबाक कार्य करैत छल।

- ऑपरशेन अवधि: 10.5 घंटा तक निरंतर निगरानी।
- आयधु:
  - टॉरपीडो, बम आ डीप चार्ज।
  - DK-12 गन सिस्टम, जे 23 मिमी AM-23 तोप सँ लैस अछि।

टि.यू. 142 भारतीय नौसेना लेल मात्र एकटा युद्धक साधन नहि, बल्कि रणनीतिक महत्त्वक एकटा अचूक हथियार बनल।

इतिहासक गौरवगाथा

1. समद्री गश्ती आ पनडुब्बी शिकार: विमान कशर्न्-के खोज प्रणाली, एमएमएस-106 लादोगा मग्नैटोमीटर, आ सक्रिय आ निष्क्रिय सोनार बुई सँ लैस छल। ई पनडुब्बीक हलचल केँ सटीकता सँ पकड़बाक क्षमता रखैत अछि।

2. मिशनक अवधि: एक बेरक उड़ानमे 16 घंटा तक निरंतर गश्ती कएल जा सकैत अछि।

3. सक्रिय योगदान: कारगिल युद्ध आ विभिन्न समुद्री अभियानमे अपन महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह केलक।

4. ई विमान भारतीय महासागरक प्रहरी बनल, जे भारतीय तटीय सरुक्षा आ पनडुब्बी विरोधी ऑपरशेनक अभिन्न हिस्सा छल।

5. 2017 म, ट्रोपेक्स अभ्यासक दौरान, एकटा टि.य. 142 विमान 53 घटांक उड़ान रिकॉर्ड कएलक।

6. एहि विमान केँ भारतमे 'अल्बाट्रॉस' आ 'महासागरक प्रहरी' कहल जाएत अछि।

भारतक नौसेनामे टि.यू. 142 कए शामिल करब समुद्री सुरक्षा लेल क्रांतिकारी साबित भेल। ई विमान पनडुब्बीक खोज आ नष्ट करबाक लेल आवश्यक सोनार बई सिस्टम आ उन्नत मग्नैटिक एनॉमली डिटेक्टर सँ

सज्जित छल। कारगिल युद्ध आ भारतीय महासागरक रणनीतिक मिशनमे एहि विमानक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल।

आईएनएस विक्रमादित्यक सहकार्य सँ चलैत एहि विमानक अभियान भारतीय समुद्री सीमा कैँ अजेय बना देने छल। 2017 मे जखन ई विमानक सेवा समाप्त भेल, तखन भारतीय नौसेनाक इतिहासमे एकटा स्वर्णिम अध्याय बंद भेल।

संग्रहालयक निर्माण आ वर्तमान स्वरूप

टि.यू. 142 कैँ सेवा समाप्तिक बाद विशाखपट्टनमक समुद्री तट लग संग्रहालयमे परिवर्तित कएल गेल। 2017 मे ई संग्रहालय आम लोकक लेल उद्घाटित भेल। एतय ई विमान कैँ एहन तरहेँ स्थापित कएल गेल अछि, जहि सँ आगंतुक सभ विमानक अंदर आ बाहर दुनूक अनुभव कऽ सकैत छथि।

संग्रहालयक मुख्य आकर्षण सभ:

1. इंटरएक्टिव डिस्प्ल: संग्रहालयमे विमानक अंदर जँका संरचना राखल गेल अछि, जतय आगंतुक सभ कैँ सोनार सिस्टम, रडार आ विमानक इंजिन संचालनक अनुभव होइत अछि।

2. विमानक अदंरक यात्रा: विमानक अंदरक हिस्सा देखबाक व्यवस्था अछि, जतय तकनीकी उपकरण सभ आ पाइलटक केबिनक साक्षात अनुभव होइत अछि।

3. थीम पार्क: संग्रहालय लग एकटा थीम पार्क सेहो अछि, जतय बाल-बच्चा सभ कैँ विमानक मॉडलक संग ज्ञान प्राप्त करबाक अवसर भेटैत अछि।

संग्रहालय मे घुमैत हमर नजर एकटा इंटरएक्टिव डिस्प्ले पर पड़ल जाहि मे भारतीय सेना द्वारा देल जाय बला विभिन्न चक्र आ मेडल के डिजाइन के खिस्सा जांबाक अवसर प्राप्त भेल

सावित्रीबाई खानोलकर: पराक्रमक प्रतीकक सृजिता

सावित्रीबाई खानोलकर (जन्म: ईव इवोन मडाय डे मारोस, 20 जुलाई 1913 -26 नवम्बर 1990) स्विस-भारतीय डिजाइनर छलीह, जे भारतीय सेनाक सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परम वीर चक्रक डिजाइनर रूपमे प्रसिद्ध छथि। ई पुरस्कार युद्धक समयमे असाधारण पराक्रम देखेनिहार वीर सैनिक सभ कैँ प्रदान कएल जाइत अछि। सावित्रीबाई खानोलकर अनेक महत्वपूर्ण वीरता पदकसभक डिजाइन सेहो कएलनि, जइसमे अशोक चक्र (AC), महावीर चक्र (MVC), कीर्ति चक्र (KC), वीर चक्र (VrC) आ शौर्य चक्र (SC) शामिल अछि। ओ 1947 केर जनरल सर्विस मडेलक डिजाइन सेहो कएलनि, जे 1965 धरि उपयोग कएल गेल। सावित्रीबाई एकटा कुशल चित्रकार आ कलाकार सेहो छलीह।

सावित्रीबाई खानोलकरक जन्म ईव इवोन मडाय डे मारोस नामसँ न्यशूाटेल, स्विट्जरलडैंमे 20 जुलाई 1913 कैँ भेल छल। 1932 मे ओ भारतीय सेना केर कैप्टन (बादमे मेजर जनरल) विक्रम रामजी खानोलकरसँ विवाह कएलनि। विवाहक बाद ओ सावित्रीबाई खानोलकर बनलीह, हिंदू धर्म अपनएलनि आ भारतीय नागरिकता प्राप्त कएलनि। भारतक स्वतंत्रताक बाद, भारतीय सेनाक एडजटेंट जनरल मजेर जनरल हीरा लाल अटलक अनुरोधपर सावित्रीबाई कैँ भारतक सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परम वीर चक्रक डिजाइन करबाक जिम्मेदारी देल गेल। मेजर जनरल अतल कैँ विश्वास छल जे भारतीय संस्कृति, संस्कृत आ

वेदसभमे सावित्रीबाईक गहन ज्ञान एहि पुरस्कारक डिजाइनमे वास्तविक भारतीय भावना समाहित करत।

परम वीर चक्रक डिजाइन भारतीय संस्कृति आ पराक्रमक प्रतीक छी। एहि चक्रक रूपमे चक्रवर्ती सम्राट अशोकक सिंहासनपर उकेरल चक्रक प्रतीकक उपयोग कएल गेल अछि। ई डिजाइन युद्धमे वीरताक अद्वितीय भावनाक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

सावित्रीबाईक बड़का बेटी कुमुदिनी शर्माक देवर मजेर सोमनाथ शर्मा (4 कुमाऊँ रेजिमेंट) भारत-पाकिस्तान युद्ध 1947क दौरान 3 नवम्बर 1947 कँ कश्मीरमे वीरगतिक प्राप्त कएलनि। हुनका मरणोपरांत पहिल परम वीर चक्र प्रदान कएल गेल। ई संयोग सावित्रीबाईक जीवनक वीरताक इतिहासमे एकटा अद्वितीय स्थान बनाबैत अछि।

एहि संग्रहालयक यात्रा कए संपूर्ण रूपेँ ऐतिहासिक, तकनीकी आ सांस्कृतिक अनुभवक संग जोड़ल जा सकैत अछि।

- समय: संग्रहालय सप्ताहक सातो दिन 2 बजे दुपहर से 9 बजे राति धरि खुलल रहैत अछि।
- प्रवेश शुल्क: 100 रु० मे टीयू 142 आ आईएनएस कुरसुरा दुनु संग्रहालय के संयुक्त टिकट भेटय अछि। बच्चा लेल ई दर आधा भ जाय छैक।

विशाखपट्टनमक रत्न: आई.एन.एस. कुरसरा सग्रंहालयक गाथा

विशाखपट्टनमक समुद्र तटपर स्थित आई.एन.एस. कुरसुरा संग्रहालय सेहो एकटा आकर्षक स्थल छी, जतऽ आधुनिक सैन्य इतिहास, नौसेनाक गौरव

आ समुद्री अभियानीक अद्भुत संगम देखल जा सकैत अछि। ई संग्रहालय भारतीय नौसेना आ पनडुब्बी अभियानीक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज छी, जेकरा देखबाक संग अहाँक मनमे अद्भुत गर्व आ प्रेरणा उत्पन्न होइत अछि।

आई.एन.एस. कुरसुरा (एसएसके 42) सोवियत संघक फॉक्सट्रॉट-क्लास डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी छल। 18 दिसंबर 1969 कें भारतीय नौसेनाक हिस्सा बनल ई पनडुब्बी 31 वर्षक सेवा प्रदान कएलक। भारतीय महासागरक प्रहरीक रूपमे ई पनडुब्बी कईटा प्रमुख अभियानमे हिस्सा लेलक, जइसँ भारतीय नौसेनाक सामरिक शक्ति आ रणनीतिक क्षमताक प्रदर्शन भेल।

1971 करे यद्ध आ सवोक उपलब्धि

कुरसुराक भारत-पाकिस्तान युद्ध 1971 मे अहम भूमिका रहल। एहि युद्धमे ई पनडुब्बी गुप्त गश्ती मिशनसभमे शामिल रहल, जे भारतीय नौसेनाक रणनीतिक सफलतामे योगदान देलक। बादमे ई विभिन्न नौसैनिक अभ्यासमे हिस्सा लेलनि, जइमे दोसर देशसभक संग सहकार्य सेहो कएल गेल। कुरसुरा अनेक अवसर पर अन्य देशसभक "गुडविल" भ्रमण सेहो कएलक।

महत्वपणू सवो अवधि

- 1971 कें भारत-पाक यद्ध: कुरसुरा पनडुब्बी युद्धक समय भारतीय तटीय क्षेत्रक सुरक्षा सुनिश्चित करबाक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभेलक।
- शांतिपणू गश्ती: समुद्रक विभिन्न क्षेत्रमे निगरानी आ भारतीय समुद्री सीमा पर सुरक्षा प्रदान करबाक कार्य करैत रहल।

22 फरवरी 2001 कैं सेवा समाप्तिक बाद, एहि पनडुब्बी कैं विशाखपट्टनमक समुद्र तटक संग्रहालयमे बदलल गेल, जाहिसँ आम जनता एहि सैन्य गौरवक अनुभव कऽ सकए।

कुरसराुक सरंचना आ क्षमता

- लबांई: 91.3 मीटर।
- चौड़ाई: 8 मीटर।
- ड्राफ्ट: 6 मीटर।
- विस्थापन:
  - सतह पर: 1,950 टन।
  - जलमग्न अवस्था मे: 2,475 टन।
- गति:
  - सतह पर: 16 नॉट।
  - जलमग्न अवस्था मे: 15 नॉट।
- पावर सिस्टम: डीजल-इलेक्ट्रिक इंजन, जइसँ सतह पर यात्रा करबाक संग-संग जलमग्न अवस्थामे शक्ति प्रदान होइत अछि।

आयधु आ क्षमता

- टॉरपीडो ट्यब: 10टा टॉरपीडो ट्यूब (छहटा अगिला आ चारि पिछला)।
- गहराई क्षमता: 250 मीटर धरि जलमग्न यात्रा।

- क्रू सदस्य: 77 सदस्यक क्षमता, जइमे अधिकारी आ नाविक दुनू शामिल छथि।

सग्रंहालयक वतर्मान रूप: ऐतिहासिक धरोहरक पनुरुद्धार

डीकमीशनिंगक बाद, 9 अगस्त 2002 कैं आंध्र प्रदेशक मुख्यमंत्री एन. चद्रंबाबू नायडू एहि पनडुब्बी कैं राष्ट्रक प्रति समर्पित कएलनि। 24 अगस्त 2002 कैं एहि कैं सार्वजनिक संग्रहालयक रूपमे विशाखापट्टनमक आर.के. बीच पर राखल गेल। ई अपन अंतिम यात्रा विशाखापट्टनम धरि पूरा कएलक आ ततबे समयसँ ई पर्यटकसभक लेल एक अद्वितीय आकर्षण बनि गेल। आई.एन.एस. कुरसुरा संग्रहालय केवल एकटा युद्धपोत नहि, बल्कि भारतीय नौसेनाक साहस, शौर्य आ समर्पणक जीवंत दस्तावेज छी। एहि संग्रहालयमे लोक अपनहि आँखिसँ पनडुब्बीक अंदरक जीवन आ संचालनक जटिलता कैं देख सकैत छथि। कुरसुरा दुनियाक ओहि पनडुब्बीसभमे सँ एक छी जे संग्रहालय बनलाक बादो अपन मूल रूपमे संरक्षित अछि। विशाखापट्टनमक "जरूर देखय योग्य" गन्तव्यक रूपमे ई प्रसिद्ध अछि। खास बात ई अछि जे डीकमीशन कएलाक बावजूद, कुरसुरा कैं भारतीय नौसेनाक "ड्रेसिंग शिप" सम्मान देल जाइत अछि, जे सामान्यतः सक्रिय जहाजसभकैं देल जाइत अछि।

प्रमखु आकर्षण

1. पनडुब्बीक आतंरिक भागक अनभुव:
   आगंतुक सभ के पनडुब्बीक संकुचित गलियारा, नियंत्रण कक्ष, सोनार प्रणाली आ टॉरपीडो कक्षक निरीक्षण सद्यह करबाक अवसर भेटय छैन।

2. डिजिटल प्रदशर्न आ सचूना केंद्र:

संग्रहालयमे आधुनिक डिजिटल स्क्रीन आ मल्टीमीडिया प्रदर्शनक माध्यम सँ पनडुब्बीक इतिहास आ योगदान पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

3. नौसनिक जीवनक झलक:
   संग्रहालयमे नौसैनिक क्रूक दैनिक जीवन, चुनौती आ संग्रामक अनुभवक झलक सेहो देखायल जाइत अछि।

ई संग्रहालय मात्र एकटा ऐतिहासिक स्थल नहि, बल्कि भारतीय रक्षा प्रणालीक प्रति लोकक जागरूकता आ गर्वक भावना जगबैत अछि। यदि अहाँ विशाखपट्टनम जाएब, तऽ एहि संग्रहालयक यात्रा जरूर करू।

[प्रणव कुमार झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली, जनवरी 2025]

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.प्रणव कुमार झा-लोकतंत्रक रंगमंच

३.२.राज किशोर मिश्र-हम नव स्वर छी

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-कान्ह चखौतथि कब कब ओल

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-२० टा हाइकू

३.५.राम शंकर झा "मैथिल"- कोल्हूक बरद

३.१.प्रणव कुमार झा-लोकतंत्रक रंगमंच



प्रणव कुमार झा

लोकतत्रंक रगंमचं

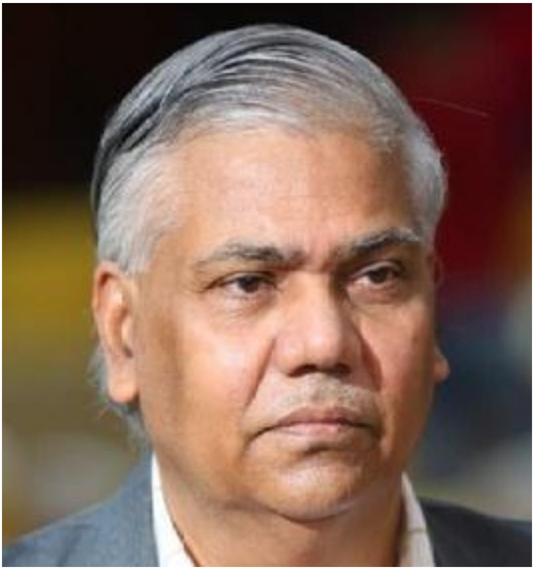
लोकतंत्रक रंगमंच पर, खेल अजगुत होइत अछि,
नेता लोकनि वादा करैत, जनता लहालोट होइत अछि।
कखनो पार्टी गलबहिया करत, कखनो बैर विरोधक राग,
जनता बीच भ्रमक जाल, केकरो पर करी कोना विश्वास?
चुनावी रैली, भाषण भारी, आश्वासनक बौछारि,
वोटक लेल सब किछु संभव, बाद में देत नकारि।
भाषण मे नै रहल मिठास, सबहक बोल भेल कड़वा
कि केलहु, कि करब बात नै, बस लड़बैत रहत सरबा।
मीडिया मुद्दाक बात उठाओत नै, करत टीआरपीक खोज
बिना बात के मुद्दा पर मुर्गा, लड़बईत रहत रोज ।
कोना समाज समृद्ध सुखी होय, किए करत विचार
टीवी न्यूज मे जनता खोजय पापड़, घी, आचार ।
जनता भेल अछि साधन मात्र, वोटक गिनतीक खेल,
सेवा शब्दक अर्थ विलुप्त भेल, पैसाक राजक मेल।

चुनावक संग फूटल सपना, आशाक बुझाइत अछि अंत,
लोकतंत्रक दीप जरबाक लेल, कतय अछि सत्यक पंथ?

[प्रणव कुमार झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली]

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.राज किशोर मिश्र-हम नव स्वर छी



राज किशोर मिश्र

हम नव स्वर छी

नव जुग के हम स्वर छी,

विज्ञानक बोल प्रखर छी।

ढोँग-ढकोसला-बंधन सँ,

छी नहि हम कनिको बान्हल ,

हम नहि ओ वाणी,जुग-जुग सँ

जे आर्त भेल बस कानल ।

हम छी उन्मुक्त अकास सन ,

जकर नहि गाड़ल बुर्जा ,

हम छी अनंत व्योम के

गुंजायमान ध्वनि-ऊर्जा ।

नूतन समयक अश्वरथक हम घर्घर ,

सुनि रहल हमरा,बीतल काल जर्जर ।

नव जुग के स्वागत मे हम छी उठल तान ,

जेना प्रतिपदा के बाद गगन मे उगल चान ।

आगू दिस बढ़ि रहल हम छी धाप-ध्वनि ,

चमकैत चारू कात जनु मनिआर-मणि ।

प्रीति-अनुरागक मधुमय बोल ,

विजय-हुलासक गर्दम-घोल ।

जे हारि क' फेर जीत गेल ,

हम तकर गीत ,

ध्येय-पथक हम शंखनाद,

हम नव संगीत ।

हम प्रगतिक प्रस्थान लेल,

गाओल गेल मंगल-गान ,

आ' दुर्वाक्षतक मंत्र संग ,

शुभ-शुभ होइत चुमान।

नवजुगक सृजन लेल स्वस्तिवचन,

हम जग कल्याणक नव प्रवचन।

हम नव जागरणक नव ऋचा-स्वर ,

छी मंत्र ओ जे पढ़ल विज्ञान-अधर ।

फेक्टरीक कर्कश अबाज छी ,

झन-झन करैत पाकल धान ,

उन्मुक्त बोल नवतुरिआ के ,

हम स्वर नभभेदी मंगल-यान ।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-कान्ह चखौतथि कब कब ओल



प्रमोद झा 'गोकुल'

कान्ह चखौतथि कब कब ओल

जाति पाति नहिं पूछय कोइ।
हरिके भजय से हरिके होइ।।
सोल्हकन बाभन दलित भंगी।
सबहक हिरदय राम बजरंगी।।
सीमा रेखा सब नांघि चुकल अछि।
दूरा दरबज्जा एकठार भेल अछि।।
ऊँच नीच सब भेल निपत्ता।
समता बाजय चढ़िके हत्ता।।

खत्तामे गरल जे अभिशाप बनल छल।
भारतक भाग्यके जे डसि रहल छल।।
तकरा पुनि जीबंत की कय रहल छी?
दुर्छी दुर्छी अहाँ सब ई की कय रहल छी ??
स्वार्थ चटोर भै जुनि बटेर लड़ाउ।
बिसरल बात पुनि जुनि दोहराउ।।
वसुधैब कुटुम्ब केर धुजा फहराउ।
अपने घर अपने जुनि आगि लगाउ।।
घर घर सीता करै छथि पुछारि।
राम ठाढ़ छथि दुवारिये दुवारि ।।
चुप रहु चुप रहु बाजू जुनि बेसी बड़ बोल।
राधा सङ कान्ह चखौतथि कब कब ओल ।।

- प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुवनी (विहार) फोन-9871779851

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-२० टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मन'ु

बीसटा हाइकु

१

अमर कंठ

अमृत स्वर अछि

माय अहाँके

२

पाइ रहितो

भूखक दर्द पुछू

कोनो बापसँ

३

मायक हाथ

बापकेर संगति

भाग्यवानकेँ

४

एखनो स्वाद

पनिगर सागकेँ

मोन परैए

५

भूखल पेटे

खूब यादि अबैए

चीनीक रोल

६

घमंड संगे

गर्व अछि हमरा

बाबूजीपर

७

बाबूक बात

माँकेँ लात बूझलौं

चालीस बाद

८

कहेलौं आब

हुनकर प्रेममे

हम बताह

९

दीप आ बाती

सिनेहक खातीर

संगे जरल

१०

नै पजारब

प्रेमक आगि हम

अहाँक बिना

११

हम सचेत

मधुपान करब

डंक रहित

१२

मन फूलल

कोहबर रांगल

पिया अओता

१३

मोनक तार

अहुँकेँ पहुँचल

मानु नै मानु

१४

कियो हमर

करेज छू लेलक

बिन कहने

१५

हृदय जोड़ि

नहि सिखलौं हम

तोड़ैकेँ कला

१६

दर्द हमर

दबि क रहि गेल

बीच सभामे

१७

प्रेम केनाइ

आजुक समयमे

जान देनाइ

१८

हम बेजान

बाट देख थकलौं

अहाँ एलौं नै

१९

प्रेमक रोग

बताह बनेलक

दुख सहलौं

२०

प्रेम करब

प्रेम निबाहबमे

अन्तर छैक

- जगदानन्द झा 'मनु', मोबाइल नंबर ९२१२ ४६ १००६

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.५.राम शंकर झा "मैथिल"- कोल्हूक बरद



राम शकंर झा "मथिल"

कोल्हूक बरद

कोल्हूक कें बरद बनि घूमि रहल छि
जिनगी कें पहिया घसा रहल छि..!
कोल्हूक बरद बनि......!
कतह जायब..? कोना जायब...?
कियाक जायब.? कैय लाअ जायब
सब देखा- देखी मे भागि रहल अछि
पराअ रहल अछि
कोल्हूक बरद बनि....!
सब कें बुझल छैय सबकें देखल छैय
सब कें रमल छैय सबकें गमल छैय
किछु आंगा किछु बीच मे किछु पहिने
किछु संजोगने किछु समाहरने नुकाबैत
कोल्हूक कें बरद बनि....!
एहि बारि ओहि बारि ई खेत उ खेत
जोईत रहल छि जोतबा रहल छि

एहि गाम ओहि गाम ई नगर उ नगर
छिछिआ रहल छि बौआह रहल छि
कियाअ कथिलाअ ककरालाअ..?
ने हिनका बुझल ने हुनका बुझल
सब एक दोसर कें दाबैत पिचैत
कोल्हूक कें बरद बनि.....!
मरदक मोंछ बनि ऐंठि रहल छि
ग़ुमान लेल गामा पहलबान लेल
खरीदा रहल किताअ पअर किताअ
ठोकबा रहल छि कोठी पअर कोठी
नहिं साँझ नहिं भोर नहिं भिंसर
नहिं कलौउ नहिं बेरहट नहिं राति
बताह भेल भकुआ रहल छि
कोल्हूक कें बरद बनि....!
एहि ठाम ओहि ठाम सुनि रहल छि
आउ ठाम आउ ठाम सुनबा रहल छि
सब घर-घरान गाबि रहल अछि
सब सर -समांग गबबा रहल अछि
मुदा कें सुनत किनका सुनत..?
अपनहिं उल्लू सोझ करबाक लेल
ओंघाल अपसिंआत ओझराल छि
कोल्हूक कें बरद बनि....!
ज्यों जिनगीक यथार्थ मर्म बुझि
किछु दैत रहि किछु दियाबैत रहि
हंसी-हंस बाजि हँसाबैत रहि
हंसी-ठठाक बथान मचान

धिया-पुता सङ्ग बनाबैत रहि
मुदा जानि नहिं.....
कोल्हूक कें बरद बनि घूमि रहल छि
जिनगी कें पहिया घसा रहल छि...!!

-राम शंकर झा "मैथिल", उघरा, दरभंगा

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

